श दर्शन

यूगोस्लैविया



देश-दर्शन

प्रत्येक अङ्क में प्रायः निम्नलिखित विषय रहेंगे जो आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये जा सकेंगे :—

१—देश का आकार, विस्तार, बनावट, दृश्य। २—जलवायु और उपज। ३—पालतू और जंगली जानवर। ४—कारबार। ५—व्यापार, बाज़ार, मेला। ६—जनसंख्या और जातियां। ७—शिक्षा। ८—पुराने समय पर एक नज़र। ९—वर्तमान शासन। १०—रहन-सहन। ११—भाषा, कहानी। १२—देखने योग्य शहर। १३—गांव का जीवन। १४—खेल कूद, त्योहार।

प्रत्येक देश का वर्णन प्रायः निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जायगा। इस माला में निम्नलिखित देश रहेंगे :—

भारतवर्ष—१—लंका, २—बरमा, ३—आसाम, ४—बंगाल, ५—बिहार, ६—उड़ीसा, ७—आन्ध्र देश, ८—तामिल, ९—केरल, १०—ट्रावनकोर, ११—कुर्ग, १२—मैसूर, १३—हैदराबाद, १४—गोआ, १५—बम्बई-महाराष्ट्र, १६—मध्यप्रान्त, १७—काठियावाड़, १८—गुजरात, १९—सिन्ध, २०—बलोचिस्तान, २१—पंजाब, २२—पटियाला, २३—जोधपुर, २४—जैपुर, २५—बीकानेर, २६—अजमेर, २७—उदयपुर, २८—कोटा, २९—भरतपुर, ३०—अलवर, ३१—ग्वालियर, ३२—इन्दौर, ३३—रीवाँ, ३४—काश्मीर, ३५—नैपाल, ३६—भूटान, ३७—शिकम, ३८—गढ़वाल, ३९—अवध, ४०—संयुक्तप्रान्त, ४१—पांडिचेरी, ४२—अंडमान, निकोबार, लका द्वीप, मालद्वीप।

एशिया—१—जापान, २—चीन, ३—कोरिया, ४—मंचूरिया, ५—मंगोलिया, ६—चीनी तुर्किस्तान, ७—तिब्बत, ८—साइबेरिया, ९—रूसी तुर्किस्तान, १०—जार्जिया, ११—आर्मेनिया, १२—टर्की १३—सिरिया, १४—पेलेस्टाइन, १५—इराक़, १६—अरब, १७—ईरान, १८—मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर, १९—स्याम, २०—जावा, २१—बोर्निया, २२—फिलीपाइन द्वीपसमूह, २३—अफ़ग़ानिस्तान, २४—किरगीज प्रजातन्त्र।

योरुप—१—आयर्लैंड, २—ब्रिटेन, ३—फ्रांस, ४—हालैंड, ५—बेल्जियम, ६—डेनमार्क, ७—नार्वे ८—स्वीडन, ९—आइसलंड, १०—फिनलैण्ड, ११—रूस, १२—यूक्रेन, १३—पोलैंड, १४—रूमानिया, १५—बल्गेरिया, १६—लिथुएनिया, लैटविया और एस्थोनिया,

अगस्त १९४०] # देश-दर्शन [श्रावण १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] ## यूगोस्लैविया [संख्या २

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

संक्षिप्त इतिहास

सर्ब जाति का संक्षिप्त इतिहास

सर्ब जाति लगभग ५०० साल तक तुर्कों के अधिकार में रही। यह जाति सदैव स्वतंत्र होने के लिये लड़ती और प्रयत्न करती रही है, कभी यह जाति स्वतंत्रता प्राप्त करने से निराश नहीं हुई। सन् १८६७ में इस जाति वालों ने अपने वैरियों को मार भगाया।

सर्ब लोग तुर्कों के अधिकार में एक गुलाम की भांति रहते थे। तुर्क लोगों नेजो कुछ भी इनके देश में पाया अपने देश को उठा ले गये और सर्विया देश के मालिक बन बैठे। इन लोगों ने सर्ब जाति पर बड़े जुल्म किये जिसके कारण वहां बहुधा विद्रोह हुये। समय समय पर बड़ी बड़ी कठिनाइयों के होते हुये भी यह लोग अपनी स्वतंत्रता के लिये उठ खड़े हुये। किन्तु दुश्मनों की शक्ति अधिक होने के कारण इनको सफलता नहीं मिली। यह लोग कभी भी निराश नहीं हुये। अपने पूर्वजों की बहादुरी की कहानियों को सुन कर और पढ़ कर के यह लोग हिम्मत बांधे ही रहे और

साहस नहीं छोड़ा। इनके पूर्वजों के गुण-गान बड़ी बड़ी पुस्तकों और कविताओं में है।

बारहवीं, तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में सर्बिया एक धनी और शक्तिशाली राज्य था। उस काल के कुछ सूरमाओं का हाल इस जाति के इतिहास में सदैव लिखा रहेगा। यहां के राष्ट्रीय सूरमाओं में जार लाज़ार की गणना सब से बढ़ कर है। वह अंतिम राजा था। उसने अपनी जाति को खुश रखने के लिये भरसक प्रयत्न किया था। १३८६ ई० में कोसाओ की लड़ाई में उसको उसके एक मित्र ने धोखा दिया। जिसके फल स्वरूप उसके बैरियों को मौका मिल गया और उन्होंने जार लाज़ार का सिर उतार लिया। जब राजा के मरने का हाल सब लोगों को ज्ञात हुआ तो उनका साहस जाता रहा। उनकी हार हुई और उनका देश तुर्कों के हाथ चला गया। इस दुखान्त घटना से सर्ब जाति के विख्यात राज्य का अन्त हो गया। अब भी विडोव-डान की लड़ाई की वर्षगाँठ बड़े समारोह के साथ मनाई जाती है।

कोसाओ की दुर्घटना और सर्बिया राज्य के सर्ब-

नाश की आग यहाँ के लोगों के दिलों में सदियों जलती और भभकती रही। सदैव उन लोगों को बदला लेने की याद बनी रही। १६१२ ई० में समय आ ही गया और इन लोगों ने कैसाओ का नगर फिर तुर्कों से जीत लिया।

सन् १६०४ ई० में बर्तमान यूगोस्लैविया नरेश के पर दादा कारा-जार्ज ने अपने साथियों से कहा कि वे तुर्कों के विरुद्ध आवाज उठावें और परतंत्रता के जुवे को उठा कर फेंक दें। सारे सर्विया प्रान्त में लड़ाई के सामान पहुँच गये और एकाएक सब कहीं विद्रोह हो गया। बहुत बड़ी लड़ाई के पश्चात् सर्व लोगों की जीत हुई और उनकी स्वतंत्रता का नींव फिर से पड़ गई।

किन्तु १६१३ में तुर्कों ने अपनी सारी शक्ति के साथ सर्बों पर आक्रमण किया। सर्बों का नेता कारा जार्ज देश छोड़ कर भाग गया और पकड़ कर कारागार में डाल दिया गया। दैव गति से इसके कुछ सालों के बाद डाकुओं विद्रोह हुआ। इस विद्रोह का नेता मिलोश आवोनोविच था। यह विद्रोह सफल हुआ इसके बाद सर्व लोगों की स्वतंत्रता का मार्ग खुल गया।

१८६७ ई० से बेलग्रेड का किला तुर्कों के आधीन

था उसको उन्होंने छोड़ दिया ।। इस प्रकार सर्विया देश स्वतंत्र हो गया ।

जिस समय सर्विया स्वतंत्र हुआ उस समय देश की दशा बहुत शोचनीय थी । रेल, तार, बिजली, सड़क, नहर, गैस आदि कुछ भी देश में न थे । कुछ सर्व लोग अपना देश छोड़ कर आस्ट्रिया चले गये और उन्होंने वहाँ पर शिक्षा प्राप्त की । वे शीघ्र अपने देश को लौट आये । उन लोगों की संख्या गिनी चुनी थी । उनके सामने सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और देश के दूसरे सुधारों के प्रश्न थे ।

वर्तमान शताब्दी में डोसिटी ओब्राडेचि और अक कराडिच दो व्यक्तियों ने बहुत बड़ा काम किया । अक कराडचिज सर्बियन भाषा का पिता कहा जाता है । उसने सर्बियन भाषा का व्याकरण बनाया । सर्व भाषा के शब्दोच्चारणों को ठीक किया । बहुत सी किताबें लिखी और शब्द कोष बनाया । डोसीटी ओब्रो डाविच एक प्रसिद्ध लेखक और प्रचारक था उसने दूर दूर देशों का भ्रमण किया था वह इंगलैण्ड में भी रह चुका था । वह सर्विया देश में भी रह चुका था ।

उसने सर्विया देश में सभ्यता और विद्या का प्रचार किया। कला-कला की नींव भी उसी ने डाली थी।

१९१४ की लड़ाई में सर्विया इंगलैंड फ्रांस के साथ होकर लड़ा। पीटर (यहां के राजा) ने जब सर्वियन सेना को मजबूर होकर अल्बेलियन आल्पस की ओर लौटना पड़ा, तो बड़ा काम किया था। वह भी अपनी सेना के साथ ही था। उसने अपने जीवन काल में ही अपनी सेना को फिर बैरियों की सेना के ऊपर विजयी होते देखा। उसने अपने जीवन काल में स्लैव को एक स्वतंत्र राष्ट्र में संगठित होते भी देख लिया। उसके पुत्र अलिक्जन्डर उसके स्थान पर सर्विया के नहीं वरन् यूगोस्लोविया के राजा हो गये।

देश दर्शन

बेल्ग्रेड

बेल्ग्रेड नगर सर्बिया की राजधानी है। यह नगर फिर से बनाया गया है। जिन लोगों ने इसे १५ या २० साल पहले देखा होगा वे कदाचित इस नगर को न पहचान सकें।

योरुप की बड़ी लड़ाई के समय बेल्ग्रेड नगर पर बम्ब की वर्षा करके सारे नगर को तहस-नहस कर दिया गया था। यदि कोई घर दैवयोग से बच भी गया था। तो उसकी सारी वस्तुएँ दुश्मन लोग उठा ले गये थे। जब नगर के निवासी अपने घरों को लौटे तो उन्होंने अपने मकानों को उजड़ा हुआ पाया। दूकानें इस प्रकार उजड़ गई थीं कि एक पैसे का डोरा भी मिलना दुर्लभ था। वहाँ के निवासी कम्बल या पुराने पर्दों के कपड़े पहने हुये दिखाई पड़ते थे।

रहने के लिये मकान बनाने की इतनी सख्त जरूरत थी कि सभी निवासियों ने मकानात बनाने आरम्भ किये। बेल्ग्रेड नगर मजदूरों से भर गया। ईंट, चूना और दूसरे मकान के सामान ढोने वाली लारियां और

गाड़ियों की धूम मच गई। सड़कों पर इतनी गर्द उड़ती थी कि उसका वर्णन करना कठिन है।

लोगों ने वर्तमान बेल्ग्रेड के मकानों के छः तल्ला ऊँचा बनाया है। यह नगर पहले से अधिक प्रसिद्ध हो गया है। यहां अब अधिक से अधिक लोग बसते चले जा रहे हैं। पहले यहाँ की जन संख्या ८०,००० थी किन्तु इस समय यहाँ की जन-संख्या २,००,००० से भी अधिक है।

बेल्ग्रेड को लोग "कंक्रीट नगर" के नाम से पुकारते हैं। सभी मकानात पत्थर तथा चूने के बनाये गये हैं। किन्तु चाहे जल्दी के कारण हो या कला-कौशल की कमी के कारण हो। यहाँ के मकानों में शिल्प कला की खूबी प्रगट नहीं होती। तो भी यहां के निवासियों को बेल्ग्रेड नगर पर गर्व है। आशा की जाती है कि कुछ समय में बेल्ग्रेड एक अच्छा सुन्दर नगर बन जावेगा।

बेल्ग्रेड का अर्थ दुर्ग होता है। प्राचीन काल में यह केवल एक किला था। इसके चारों ओर ऊँची मजबूत दीवार बनी हुई थी। जब तुर्कों का अधिकार इस पर था तो चौकीदार लोग चौकसी के साथ पहरा

दरवाजों पर देते थे। रात के समय सभी दरवाजों के किवाड़े बन्द कर दिये जाते थे और कोई भी व्यक्ति न अन्दर जा सकता था और न बाहर आ सकता था।

बेल्ग्रेड किले की दीवारें अब भी बिगड़ी दशा में खड़ी हैं। इन दीवारों से डैन्यूब और सावा दो नदियां दिखाई पड़ती हैं। किले के समीप ही केलमेगडान वाटिका है। यहां संध्या समय लोग टहलते और नदियों का दृश्य देखने जाते हैं। नदी उस पार सुन्दर मैदान है। पहले यह मैदान आस्ट्रिया वालों के अधिकार में था, किन्तु १६१८ के बाद से यहां पर यूगोस्लेविया का अधिकार गया है।

सर्व लोग बहुत दूर तक देहात की ओर वायु सेवन नेकर या टहलने के लिये नहीं जाते। वे लोग बाजारों में संध्या के समय थोड़ी देर टहलने के लिये जाते हैं। बाजारों में उनके मित्रों से भेंट होती है और सामान भी खरीदना रहता है। यहाँ की स्त्रियाँ पेरिस की स्त्रियों की भाँति पाउडर और पेंट (रँगना) का बहुत प्रयोग करती हैं। यह सुन्दर चीजों को बड़ी शौकीन होती हैं। यहां की स्त्रियाँ सुन्दर कपड़े और

फैशन की वस्तुयें अवश्य ही खरीदेंगी चाहे उन्हें इसकी बदौलत और आवश्यक वस्तुओं को लेने का पैसा न हो। बेल्ग्रेड के विश्वविद्यालय में लड़के और लड़कियों की संख्या बराबर है। वहीं पर इनके फैशन देखने का मौका मिलता है। यहां के मर्द जितना राजनीति में ब्यस्त रहते हैं उतना ही यहाँ की स्त्रियाँ फैशन में डूबी रहती हैं।

गरमी के दिनों में यहाँ के रेस्टारेन्ट और कहवा खानों का काम बाहर सड़क पर होता है। वहीं सड़कों के किनारे मेज़ों की क़तार लगी रहती है। लोग शराब पीते या क़हवा पीते दिखाई पड़ते हैं। इन स्थानों पर अधिक हवा भी मिलती है और खाने पीने वाले भली भाँति इनका दृश्य भी देख सकते हैं। यह लोग सवेरे और शाम को इन स्थानों में जलपान के हेतु जाते हैं। सर्व लोग दोपहर के बाद चाय का प्रयोग नहीं करते, इससे संध्या समय उन्हें कुछ जलपान करना आवश्यक हो जाता है।

गरमी में संध्या के समय इन स्थानों पर बैठना बड़ा सुहावना लगता है। छोटी छोटी मेज़ों पर स्वेत कपड़े बिछे रहते हैं और कुर्सियाँ लगी रहती हैं। यहाँ बाहर सड़क की हवा मकान के भीतर की हवा से कुछ ठंडी

रहती है। यहाँ पर लोग रात को बहुत देर तक बैठे गप शप करते रहते हैं।

गरमी के दिनों में यहाँ बड़ी कड़ी गरमी पड़ती है। वैसे ही जाड़े के दिनों में कड़ाके का जाड़ा भी पड़ता है। यहां बरफ बहुत गिरती है। बरफ पर चलने वाली गाड़ियों का प्रयोग किया जाता है। लड़के गलियों में बरफ के ऊपर फिसते खेलते दिखाई पड़ते हैं। बहुत से लोग स्केटिंग को पसंद करते हैं। ये लोग पहाड़ के उस पार टापशिडेर पर चले जाते हैं। टापशिडेर एक जाड़े का पार्क है जहाँ नगर से ट्रैम गाड़ी जाती है। बहुत समय बीता जब सर्विया को औपनिवेशिक स्वराज्य मिला था तो मिलोश शाहज़ादे ने अपना गरमी का मकान नहीं बनवाया था। यह मकान तुर्की ढंग का बना हुआ है।

यहां पर सुन्दर अजायब घर हैं क्योंकि अभी थोड़े ही दिन हुये कि यह देश स्वतंत्र हुआ है। तो भी नेशनल म्यूज़ियम और इथनोग्राफिकल म्यूज़ियम में बहुत सी पुरानी एतिहासिक वस्तुयें देखने योग्य एकत्रित की गई हैं। इथनौग्राफिकल म्यूज़ियम में देश के प्रत्येक भाग

की प्राचीन और आधुनिक पोशाकें लाकर एकत्रित की गई हैं।

बेल्ग्रेड नगर में सभी स्थानों और वस्तुओं में अच्छी तथा खराब वस्तुओं का मिश्रण दिखाई पड़ता है। यहाँ का ग़रीब मोटा घर का बुना कपड़ा और पाँव में खटपटी पहने एक धनी पोशाक पहने हुये व्यक्ति के साथ टहलता हुआ दिखाई पड़ेगा। बड़े बड़े सुन्दर ऊँचे महल छोटे झोपड़ों के पास बने हुये मिलेंगे। सुन्दर बढ़िया कार चीखता ज़ोरों का शब्द करती हुआ बैलगाड़ी के साथ जाती दिखाई पड़ेगी। इस प्रकार हम देखते हैं। कि यहाँ पर दो भिन्न भिन्न सभ्यताओं का मेला होता है। पूर्वी सभ्यता यहां पश्चिमी सभ्यता से मिलती है। इन दोनों के बीच में कोई न कोई वस्तु अथवा स्थान ऐसा अवश्य है जो इन दोनों को मिलाता है। किन्तु वह क्या है इसका पता नहीं चलता।

यदि हम बेल्ग्रेड के काल्मिलानोवा सड़क से मास्को काफ़ी खाने को जावें तो हम वहां के निवासियों का भली भांति परिचय ले सकते हैं। वहां पर हमें किसानों तथा पेरिस के फैशन वालों का मिला हुआ समूह मिलेगा काल्मिलानोवा में ब्वाएस डी बलोने की भाँति नये

और तीक्ष्ण छोटे फ्राक्स पहने हुये समूह दिखाई देंगे। युवा स्त्रियाँ तथा युवक लोग सुन्दर फैशन में आते जाते दिखाई पड़ेंगे। वहाँ पर मान्टोनीग्रो के निवासी कामदार गोटे वाली जाकेट पहने और गोता टोपी लगाये होंगे तथा अल्बानियन अपने पर्वतीय पहनावे में होंगे।

लोगों के पहनावे में एक बात प्रधान है कि उसमें सैनिक रंग अवश्य प्रतीत होता है। जल तथा स्थल सेना के सैनिक अफ़सर और सैनिक अपने अपने वर्दियों में दिखाई पड़ते हैं। पुलिस लोग भी गलियों में अपनी वर्दियां पहने और पीछे छोटी राइफलें लटकाये नज़र आते हैं। चर्च के पादरी तथा साधू लोग लम्बे बाल तथा डाढ़ियां रक्खे रहते हैं।

मिलोश वेलिकी सड़क बेल्ग्रेड की दूसरी बड़ी सड़क है। इस सड़क पर सभी सरकारी दफ़्तर हैं। इसी सड़क पर सुन्दर मन्त्री भवन बना है। यह सड़क क्राल्मिलालोवा सड़क को पार करती है। इसी सड़क पर रायल आपेरा हाउस है। यह सड़क नगर को पार करती हुई नगर के बाहरी भाग टाप्सचिडेर को जाती है। यहाँ पर

लोग निवास करने के लिये घर बनवाते हैं। यहीं पर एक राज-विनोद गृह बना है।

जहाँ पर क्राल्मिलानोवा तथा मिलोश वेलिकी सड़कों का संगम है उसके कुछ हा दूर पहले सड़क पर राजमहल (रायल पैलेस) तथा प्रिन्सेज़ महल हैं। इसी महल में पीटर द्वितीय निवास करता है। यदि बेल्ग्रेड की उन्नति इसी प्रकार होती रहा तो कुछ ही समय में यह नगर बलकान प्रायद्वीप में सब से अधिक सुन्दर हो जावेगा।

बेल्ग्रेड की गलियों का ठीक तरह से सुधार करना कठिन हो रहा है। जाड़े के दिनों में सब कहीं बरफ़ जम जातो है। बरसात में गलियों में कीचड़ हो जाती है। फिर भी बहुत कुछ सुधार हो गया है और बिजली और पानी पहुँचाने का सन्तोषजनक प्रबन्ध है। ट्राम्वे गाड़ियों के लिये सड़कें बना दी गई हैं और टेलीफोन तथा टेलीग्राफ का भी प्रबन्ध हो गया है।

बेल्ग्रेड यूगोस्लैविया का व्यापारिक केन्द्र है। डैन्यूब नदी पर बियना के बाद यही सब से बड़ा बन्दरगाह तथा नगर है। यहाँ के घाट बड़े मज़बूत तथा सुन्दर हैं।

जहाज़ चलने वाली दो नदियों के संगम पर होने के कारण यह नगर देश का सामान बाहर भेजता है और बाहर का सामान देश में चारों ओर बाँटता है। इस नगर में मदिरा बनाने, लोहा तयार करने, कपड़ा बुनने और बूट जूतों के बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। बर्लिन और पेरिस से जो रेलवे लाइन वियना होती हुई इस्तम्बूल को जाती है उसका बेलग्रेड एक प्रधान जंकशन है। पूर्वी तथा पश्चिमी देशों का व्यापार काफी मात्रा में इस नगर द्वारा होता है।

हवाई लाइनों द्वारा बेल्ग्रेड पेरिस, इस्तम्बूल, सेलोनीका और वियना से मिला है। यहाँ पर एक बड़ा ब्राडकास्टिंग स्टेशन है।

सर्व लोगों के घर

सर्बिया के लगभग सभी लोगों के पास अपना निजी मकान है। चाहे छोटा घर हो या बड़ा प्रत्येक मनुष्य गरीब से गरीब भी अपने निजी घर बनाते हैं। इसलिये सर्बिया प्रान्त में बेल्ग्रेड नगर को छोड़ कर और कहीं मकान किराये पर नहीं उठाये जाते। बेल्ग्रेड में किराये के मकानों की माँग बहुत है।

सर्बिया में बहुत ज्यादा धनी लोग नहीं हैं और दूसरे देशों की भाँति ऊँच नीच का व्यवहार भी नहीं है। यह एक कृषक देश है। यहाँ पर कोई भी लिखा पढ़ा किसान अपनी बुद्धि की सहायता से किसी भी पद को ग्रहण कर कर सकता है। एक ही गरीब किसान के दो पुत्र अलग अलग अपना जीवन साधन कर सकते हैं। उनमें से एक उच्च पद का राजनीतिज्ञ हो सकता है और दूसरा एक गरीब किसान रह सकता है। किन्तु जब दोनों भाई घर पर होंगे तो उनमें कोई भेद भाव न होगा सभी बराबर माने जावेंगे।

संकटों, दुःखों और बहुधा लड़ाई लड़ने के कारण यहाँ के लोग बड़े मितव्ययी होते हैं। जितना रुपया

इनके पास होता है सब का सब खर्च करना नहीं जानते। यह लोग कुछ न कुछ बचा कर रखना अवश्य जानते हैं। धनी लोग भी अधिक खर्च नहीं करते और बहुत सीधा सादा जीवन व्यतीत करते हैं। सीधा सादा जीवन व्यतीत करने के लिये उनकी आदत ही उन्हें मज़बूर करती है।

योरुप के पश्चिमी देशों की भाँति सर्विथा के मकान नहीं होते। वहाँ पर भूमि की कमी नहीं है और मूल्य भी सस्ता है। इसलिये ऊपर कई तल्ले मकान बनाने की जगह भूमि पर फैला हुआ अधिक पसन्द करते हैं। मकान के सभी कमरों में एक दूसरे से आने जाने का मार्ग रहता है। यहाँ घर के सभी लोगों के कमरे अलग अलग नहीं होते। सोने के कमरे भी यहां नहीं होते। घर के सभी प्राणियों के पहनने के कपड़े एक ही स्थान पर रक्खे जाते हैं। तेल, शीशा, कंघी, ब्रुश, दन्त मञ्जन आदि वस्तुएँ सभों के लिये एक अलग स्थान में रक्खी रहती हैं। सोकर उठने के बाद चारपाई उठा कर एक सुरक्षित स्थान पर रख दी जाती है जहाँ पर लोगों की निगाह न पड़े।

यूगोस्लैविया

यहाँ घरों में नहाने के कमरे नहीं होते। घरों के अन्दर पानी लाने की भी सुविधा नहीं है। घर के बाहर खराब पानी निकलने के लिये भी नालियों या पाइप नहीं है। सभी घरेलू कामों के लिये पानी बाहर से लाना पड़ता है।

सर्बिया के लोग बड़े सवेरे उठते हैं। ५ या ६ बजे तक सभी लोग उठ जाते हैं। कोई भी मनुष्य साढ़े सात, आठ बजे तक सोता नहीं मिलेगा। यहाँ भोजन करने का समय भी बड़ा ही अनिश्चित है। बड़े सवेरे लोग कुछ सूखे फल खाकर पानी पी लेते हैं और एक छोटा प्याला क़हवा का पीते हैं। यहाँ क़हवा पीने का इतना रिवाज है कि लोग चाहे और कुछ भी न खायँ किन्तु एक प्याला क़हवा अवश्य ही पीवेंगे।

सर्ब लोग सवेरे बिना भोजन किये ही काम पर चले जाते हैं। इसलिये दोपहर के पहले ही उन्हें भूख लग जाती है और वे घर आते ही खाने के लिये बैठ जाते हैं। वे घर के और दूसरे प्राणियों के होने न होने की बिल्कुल परवाह नहीं करते हैं। इस प्रकार घरेलू जीवन का एक आवश्यक भाग छूट जाता है।

यहाँ घर की माताओं या स्त्रियों का भोजन परोसने

का काम आसान नहीं होता। जब तक रसोई का सारा भोजन वे परोस नहीं देतीं तब तक उन्हें भोजन करने की नौबत नहीं आती। यहाँ हर एक प्रकार का भोजन एक साथ ही परोसा और खाया जाता है। खाने में बहुत जल्दी करनी पड़ती है नहीं तो सभी भोजन एक साथ परोसे जाने से शीघ्र ही ठंडा हो जाने का भय रहता है। किन्तु यहाँ लोग इसकी बहुत कम परवाह करते हैं।

यहाँ के किसान जो खेतों में दिन भर काम करते रहते हैं वे रोटी-मक्खन या रोटी प्याज खाते हैं, इसके बाद कुछ थोड़ा सा फल भी खाते हैं। इतना मामूली भोजन करने पर भी यह लोग बड़े मज़बूत और हट्टे-कट्टे होते हैं। इनकी शारीरिक तथा मानसिक शक्तियाँ बड़ी दृढ़ होती हैं और इनके भीतर सहन-शीलता और धीरज भी बहुत पाया जाता है।

सर्बिया में लोग दोपहर के बाद चाय पानी नहीं करते। वे सवेरे स्लेटको (फल) और कहवा का प्रयोग करते हैं। मेहमानों को भी यही दिया जाता है। यहाँ बैठने, गप-शप करने के लिये कमरा नहीं होता है।

यूगोस्लैविया

मेहमानों के बैठाने के लिये जो कमरा होता है वह बड़ी बुरी दशा में रहता है। उस कमरे में घर के लोग त्योहारों और उत्सवों को कभी नहीं जाते इसलिये मेहमानों को वहाँ बैठने में आराम के बजाय तकलीफ मालूम होती है।

यहाँ कुछ भागों में अब भी लोग प्राचीन काल की तरह एक वर्ण वाले (१५ या २० घर के लोग) एक साथ रहते हैं। यह घर ज़ादरुगास कहलाते हैं। घर का मालिक और अगुवा बृद्ध पिता या ज्येष्ठ पुत्र होता है। वही घर के सभी प्राणियों के आराम या तकलीफ की देख भाल करता है। जब किसी लड़की की सादी होती है तो वह अपने माता पिता के घर को छोड़ कर अपने पति के माता पिता के घर चली जाती है। भोजन बनाने का काम अधिकतर नई बहुओं से लिया जाता है। किन्तु और दूसरी स्त्रियाँ भी सहायता देती हैं। खेती बारी और दूसरे गृहस्थी के कार्यों में घर के सभी लोग हाथ बटाते हैं। किन्तु अब सभी लोग स्वतंत्रता चाहते हैं इसलिये ऐसे घरों की कमी होती जा रही है।

सर्बिया की बालिकायें

सर्बिया की बालिकाओं का जीवन वहाँ के बालकों के जीवन से बिलकुल अलग है इसका मुख्य कारण यह है कि भारतवर्ष की भांति वहाँ भी स्त्रियाँ मनुष्यों के नीचे समझी जाती हैं और उनको शिक्षा का बहुत कम ध्यान दिया जाता है। वहाँ की स्त्रियों को अपनी सुधार करने का वहाँ पर कम मौका दिया जाता है। वहाँ की तेजस्वी स्त्रियों ने अपने समाज के सुधार के लिये संस्थायें खोल रक्खी हैं और स्त्रियों को उच्च बनाने का भरसक प्रयत्न हो रहा है।

भाग्यवश इस समय वहाँ पर प्रायमरी शिक्षा बालक तथा बालिकाओं के लिये अनिवार्य हो गई है परन्तु अब भी वहाँ के बहुतेरे माता पिता अपने लड़कियों को शिक्षा नहीं देना चाहते और सरकारी कानून का उल्लंघन करते हैं। सर्बिया के कितने लड़के तथा लड़-कियाँ दोनों स्कूलों में न जाकर खेतों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं और पशुओं को चराते हैं। यद्यपि नई संतान शिक्षा के लिये बड़ी उत्तेजित है तो भी किसान लोग शिक्षा का मूल्य अब भी नहीं समझते हैं।

४०।

यूगोस्लैविया

लड़कपन से ही बालिकाओं को घरेलू कार्यों की शिक्षा दी जाती है और उन्हें केवल विवाह के लिये तयार किया जाता है। वहाँ की स्त्रियों के लिये आवश्यक है कि वे एक अच्छी गृहिणी बनें। भोजन बनाना, घर साफ करना, सीना पिरोना आदि घरेलू कार्यों को भली भाँति कर सकें यही उनका उद्देश्य है। यदि उन्होंने कुछ गाने तथा बेल बूटे काढ़ने की कला सीख लिया तो फिर उसका कहना ही क्या है। लड़कपन से ही वे अपने शादी के लिये कपड़े बनाने लगती हैं। इसलिये जब तक शादी होने का समय आता है उनके कपड़े तयार हो जाते हैं।

सर्बिया में कोई भी स्त्री कुवांरी नहीं रहती है। जैसे ही लड़कियाँ १७ या १८ साल की हो जाती हैं उनके माता पिता चारों ओर जाहिर कर देते हैं कि उनकी पुत्री विवाह के योग्य हो गई है। भारतवर्ष के प्रति कूल वहाँ लड़कियों को दहेज मिलता है। इसलिये बर का चुनाव रुपये पर होता है कि कौन सा बर कितना अधिक दहेज लड़की को दे सकता है। वहाँ के मनुष्यों की आय बहुत कम होती है। इसलिये मर्द लोग अपनी शादी भी ऐसी स्त्री के साथ करने का प्रयत्न करते हैं जिसके पास धन

हो। स्त्रियाँ अपने दहेज का धन अपने पति को दे देती हैं। यदि पति सदाचारी हुये तो फिर स्त्री का जीवन सुखी रहता है और यदि पति की चाल कुचाल हुई तो फिर स्त्री बेचारी अपना दुःखमय जीवन व्यतीत करती है।

सर्बिया में शादी में बिचमनिया होता है। यह प्रोवोडाडजिया कहलाता है। यही व्यक्ति मध्यस्थ होकर विवाह का निर्णय करता है। जब दहेज तय हो जाता है और बर तथा लड़की के माता पिता मान लेते हैं तो दोनों का किसी स्थान पर संयोग किया जाता है। जिसे वे एक दूसरे को पसंद कर लें। लड़कियों को स्वतंत्रता होती है कि यदि बर उनके पसन्द का न हो तो वे शादी न करें।

सर्बिया की स्त्रियाँ कभी बेकार नहीं बैठतीं। परन्तु उन्हें यह ज्ञान नहीं है कि वे अपने घरेलू कार्यों का भार किस प्रकार कम कर सकती हैं। घरेलू कार्यों में उनका आवश्यकता से अधिक समय नष्ट होता है। वे सारे कार्य पुराने ढंग पर करती हैं। काम करते समय मालूम होता है वे बुद्धि का प्रयोग ही नहीं करती हैं।

यदि उन्हें कुछ सामान उठाकर कहीं रखना हुआ तो इकट्ठा ले जाने के बजाय एक एक करके ले जाती हैं।

संध्या के समय वहाँ की स्त्रियाँ अपने पड़ोसी स्त्रियों के पास बैठकर खूब गपशप करती हैं। बातें करते समय वे मोजे, रुमाल आदि बुनती रहती हैं। क्योंकि घर के सभी प्राणियों को मोज़े बनवाने और रुमालों आदि के प्रबन्ध करने का भार घर की माताओं तथा लड़कियों के सिर पर होता है।

जब घर के कार्य से फुर्सत हो जाती है तो छोटी लड़कियाँ साफ सुथरी होकर गाँव की ओर घूमने जाती हैं और अपने मित्रों के साथ वार्तालाप करती हैं। रविवार और दूसरी छुट्टियों के दिनों में स्त्रियाँ काफी-घरों, रेस्टोरेन्ट और भोजनालयों में जातो हैं और वहाँ पर बैठ कर नटों लोगों के नाच गान सुना करते हैं। इस समय वे अपनी सारी झंझटों को भूल जाते हैं।

मैसीडोनिया या प्रचीन सर्बिया का जीवन

मैसीडोनिया या प्राचीन सर्बिया के इतिहास को एक अध्याय में बताना एक कठिन कार्य है। भूमि के इस भाग में बहुत सी जातियां आ आकर बसीं और चली गईं। आज भी यहां पर सर्ब, यूनानी, अल्बानी, बलगेरी आदि जातियाँ बसी हुई हैं।

उत्तरी मैसीडोनिया या प्रचीन सर्बिया ज़ार दुशान बादशाह के समय में सर्बिया-राज्य का प्रचीन केन्द्र था। सर्बिया राज्य की राजधानी सदैव बदलती रही है। पहले यहाँ की राजधानी प्रिज़रेन थी। उसके बाद स्कोप्ल्जे हुई, फिर क्रुएस्वाक हुई और आजकल (वर्तमान समय में) बेल्ग्रेड है।

कोसोओ नामक स्थान (जहाँ पर प्रसिद्ध लड़ाई हुई है) प्राचीन सर्बिया में ही स्थित है। दक्षिण की ओर जाकर प्राचीन स्थानों को देखना बहुत ही आवश्यक है। इसी ओर यहाँ के प्राचीन ऐतिहासिक स्थान और प्राचीन संस्कृत है। यहाँ हमें पूर्वी सभ्यता (प्राचीन) का सुन्दर चित्र देखने को मिलता है, यहाँ पश्चिमी सभ्यता का प्रचार नहीं है।

यूगोस्लैविया

इस भाग के निवासी अपने प्राचीन भेष धारण करते हैं। यहां जब कोई यात्री वर्तमान भेष में आता है तो उसका भेष अच्छा नहीं मालूम होता और यहाँ के निवासी उसे बड़ी उत्सुकता से देखते हैं। धुर दक्षिण में बहुत से गाँव और नगर ऐसे हैं जहाँ तक रेल की सड़क नहीं जाती है। वहाँ सब बैलगाड़ी द्वारा ही जा सकते हैं। यहाँ के लोग एक तरह से दुनिया से अलग हैं और उनके ऊपर दुनिया का प्रभाव नहीं पड़ता है। इन लोगों का जीवन बड़ा सादा है किन्तु यह लोग बड़े चमकीले और सुन्दर कपड़े पहनते हैं। वे अपनी बनाई हुई और पैदा की हुई वस्तुओं ही पर निर्भर रहते हैं। वे अपने हाथों के बनाए हुए कपड़े पहनते हैं। यहाँ कपड़ों पर बेल-बूटे और कारीगरी बड़ी सुन्दर होती है। यह काम स्त्रियाँ करती हैं। घर के पहनने के लिये कपड़े स्त्रियाँ ही तयार करती हैं। यह लोग इतना मज़बूत कपड़ा बनाती हैं कि वह कई वर्ष चलते हैं। इन वस्त्रों के बनाने में बड़ा समय लगता है और बड़ी तकलीफ होती है, किन्तु इनको इसकी बिलकुल परवाह नहीं होती। बेल-बूटे का काम जाड़े के दिनों में ज़्यादा किया जाता है।

यहाँ के सुन्दर प्राकृतिक दृश्य और लोगों के कपड़े (रँग-बिरँगे) देखकर बाइबिल के दृश्य याद आ जाते हैं। पश्चिमी सभ्यता का मेल न होने के कारण यहाँ के लोगों में बड़ी मर्यादा पाई जाती है। यह लोग बड़े ही निष्कपट और सीधे-सादे हैं। इनको देखकर पुरानी या नई बाइबिल की तसवीरें सामने आ जाती हैं।

यहाँ की स्त्रियाँ बड़े बड़े बोझे अपने सिरों पर लाद कर ले जाती हैं। यह बोझ उनके सिरों पर सीधे रुके रहते हैं और वे अपने हाथों में तकली और पोनी लिये सूत कातती जाती हैं। मर्द लोग अपने काले बड़े भैंसों को पुराने ढँग की गाड़ियों में जोत कर ले जाते हैं या क़ाफ़िलों के साथ गदहा अथवा ऊँट पर सामान लाद कर ले जाते हैं। लौटते समय यह लोग अपनी सवारियों के ऊपर बैठ कर जल्दी से सरपट हांक हाकते घर पहुँच जाते हैं।

बाज़ार के दिन बाज़ारों में दूर दूर से किसान अपना अपना सामान लेकर बेचने आते हैं। बाज़ारों में बड़ी चहल-पहल रहती है और भाँति भाँति के रँगों का कपड़ा देखने में आता है।

यूगोस्लैविया

पुराने सर्बिया के भ्रमण में कुछ न कुछ कष्ट अवश्य होता है। सबसे पहली बात तो यह है कि ठहरने का स्थान इस भाग में बड़ी कठिनता से मिलता है। लोग अधिकतर मठों में ठहरते हैं, क्योंकि इनमें रहने वाले साधु-संत सदैव अतिथि-सत्कार करने के लिये तत्पर रहते हैं। यदि अभाग्यवश किसी को ठहरने के लिये मठ न मिला तो फिर उसे बड़ी दुर्दशा के साथ किसी गंदे पुराने कमरे में रात व्यतीत करनी पड़ेगी।

यहाँ लुटेरे बहुत रहते हैं। वे यात्रियों को बहुधा लूट लेते हैं। यह लोग झाड़ियों झंकाड़ों, वृक्षों या खोहों में छिपे रहते और अचानक यात्री के सामने आ जाते हैं। जब यह लुटेरे यात्री के समीप पहुँच जाते हैं तो कहते हैं कि "अपनी जान दो या माल दो"। इनको पुलीस के लोग जंगलों के बीच ढूँढ़ते रहते हैं लेकिन पकड़ नहीं पाते। जब यह बात मालूम हो जाती है कि अमुक स्थान पर डाकू छिपे हैं तो चारों ओर फौज का पहरा मार्गों पर कर दिया जाता है और यात्री लोग सूर्यास्त के पश्चात् मार्ग चलने से रोक दिये जाते हैं।

मैसीडोनिया के निवासी बड़े अन्ध-विश्वासी होते हैं। यह लोग भूत-पिशाच, टोना और बुरी नज़र पर

विश्वास करते हैं। इसीलिये मर्द-औरत, लड़के बच्चे यहाँ तक पशु भी नीले रंग की गुरिया पहने रहते हैं। बच्चे गलों में नीली गुरियों की माला पहनते हैं और बड़े लोग या तो इस रँग की बटन लगाते हैं या कान में पहनते हैं। काले भैंसे, ऊँट और गदहे आदि पशुओं के सिरों पर भी यह माला पहनाई जाती है। इन लोगों का दृढ़ विश्वास है कि ऐसी माला पहनने से शरीर पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ सकता। उनका पक्का विश्वास है कि ये मालाएँ उन्हें सभी कष्टों से सुरक्षित रखती हैं।

यहाँ आकाश सदैव नीला रहता है। पहाड़ों के ऊपर धुवाँधार दृश्य भी नीला दिखाई पड़ता है। यहाँ कई तरह के नीले फूल भी पाये जाते हैं। लोग नीले रँग की गुरिया का ही प्रयोग करते हैं जब यह नीला-रँग सूर्य की चमक से मिलता है तो बड़ा ही सुहावना होता है।

क्रोटिया का इतिहास

समूचे यूगोस्लैविया का परिचय जानने के लिये यह आवश्यक है कि हम उसके प्रत्येक भाग का कुछ न कुछ हाल अवश्य जान लें। इस पाठ में क्रोटिया का कुछ वर्णन किया जाता है। क्रोट और सर्व दोनों जातियों का उद्गम एक ही है किन्तु उनका इतिहास अलग अलग है। यही मुख्य कारण है जिससे इन दोनों जातियों के धर्म, सभ्यता, राजनीति और रहन-सहन में भिन्नता पाई जाती है। क्रोट रोमन-कैथलिक हैं और सर्व यूनान के आर्थोडाक्स चर्च के अनुयायी हैं। हमें मालूम है कि किसी भी जाति की उन्नति उसके धर्म पर होती है। इसी लिये इन दोनों जातियों की उन्नति में भिन्नता पाई जाती है।

छठवीं शताब्दी में सर्व, क्रोट और स्लोवीन जातियाँ मध्य एशिया से आकर यहाँ बलकान प्रायद्वीप में आ बसीं। यहाँ जब यह लोग पहले पहल बसे तो प्रकृति और देवताओं की पूजा किया करते थे। यह लोग ईसाई धर्म को मानने के लिये तयार नहीं थे। इनका विश्वास था कि जैसे ही हमने धर्म बदला कि हम दूसरों के

अधीन हो गये। ८६३ ई० में सीरिल और मेथाडियस नामक दो महापुरुषों ने पहले पहल स्लैव अक्षरों (लिपि) को लिखा। उसके पश्चात् इन्होंने बाइबिल का अनुवाद भी किया। इन्हीं दोनों के परिश्रम के कारण ईसाई मत का प्रचार बालकन-प्रायद्वीप में हुआ।

नवीं शताब्दी में क्रोट, सर्ब, स्लोवान जातियाँ संगठित हो गईं, किन्तु कुछ समय के बाद उनका संगठन छिन्न-भिन्न हो गया और वे तीन प्रधान भागों में बँट गईं।

क्रोटिया का राज्य दसवीं शताब्दी में स्थापित हुआ। तोमी-स्लाव बादशाह के समय में यह राज्य उन्नति के शिखर पर पहुँच गया। इसी समय एड्रियाटिक तट और दलमाशिया प्रान्त जीते गये। थोड़े समय के बाद देश में विद्रोह हो गया, जिससे यहाँ के लोगों की शक्ति क्षीण हो गई और ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में वेनीशियन जाति ने डलमेशिया तट पर अधिकार जमा लिया और बीज़ानशियम लोगों का अधिकार क्रोटिया पर हो गया।

चर्च (पादरियों) और अमीरों के बीच भी झगड़ा

हो गया। राज्य-वंश के नष्ट हो जाने से राजगद्दी के बारे में झगड़ा होने लगा। सन् ११०२ ई० में हंगारी का कोलोमान राजा चुना गया। तब से १९१४ की बड़ी लड़ाई के समय तक क्रोटिया हंगारी के अधिकार में रहा।

जब एक बार हँग्री को क्रोटिया में पैर रखने का मौका मिल गया तो फिर उन्होंने वहां पर अपना अधिक से अधिक प्रभुत्व जमाना आरम्भ किया। धीरे धीरे हंगारी का प्रभुत्व इतना बढ़ गया कि क्रोटिया के राजा का चुनाव बन्द हो गया और हंगारी का राजा यहाँ का राजा माना जाने लगा।

क्रोटिया लोगों ने परतंत्रता की डोरी काटने का भरसक प्रयत्न किया किन्तु वे सदैव असफल रहे। पीटर जुरिन्सकी और क्रस्टो फ्रैन्कोपन दो नवजवान देश प्रेमियों ने क्रोटिया को स्वतंत्र बनाने के लिये बड़ा प्रयत्न किया। उन्होंने एक विद्रोह की रचना की और उसमें टर्की की सहायता माँगी गई थी। किन्तु किसी तरह इस विद्रोह का भंडा फूट गया और टर्की ने साथ दिया। दोनों देशप्रेमियों को १६७१ ई० में पकड़ कर वियना में फाँसी दे दी गई। इन दोनों वीरों का हाल यहाँ के इतिहास में सदैव जीवित रहेगा।

१४६३ ई० में क्रोटिया पर तुर्कों का आक्रमण हुआ। तुर्कों ने हंगारी वालों से कहीं अधिक जुल्म किये। यद्यपि क्रोट जाति सभ्यता में सर्व जाति से बढ़ चढ़ कर है किन्तु इनमें देशप्रेम और देशोत्साह का भाव सर्ब लोगों से कहीं कम है।

नवीं शताब्दी के बाद नेपोलियन के समय में फिर क्रोट, सर्व और स्लोवेनीज़ एक हो गये और इलीरिया राज्य स्थापित किया। कुछ समय के बाद फिर हंगारी का अधिकार इन पर हो गया। हंगारी ने यहां के लोगों को मना कर दिया कि अब वह अपने को इलीरी या अपने देश को इलीरिया न कहें।

लूडेविट गाज़ तेरहवीं शताब्दी में क्रोटिया में पैदा हुआ। यह बड़ा देशप्रेमी, विद्वान और चतुर था। उसने क्रोटिया की भाषा बनाई और बहुत सी किताबें लिखीं। क्रोटिया भाषा लैटिन लिपि से निकली है और सर्व भाषा सीरिलिक (प्राचीन स्लाव लिपि) से बनी है। लूडेविट गाज़ ने पढ़ने के स्थान और राष्ट्रीय थियेट्रिकल कम्पनी खोली और अपने देशवासियों से देश की प्राचीन सभ्यता (स्मारक, मन्दिर) को बचाने को कहा

उसने अपने देश वासियों को समझाया कि अपनी सभ्यता का रक्षा करो नहीं तो राष्ट्रीयता का भाव ही उनमें से निकल जावेगा। और उनका नाम निशान मिट जावेगा।

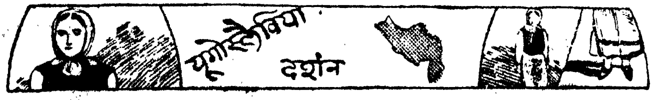
उन्नीसवीं शताब्दी में जब आस्ट्रिया का राज्य क्रोटिया में था तो कर्नल जेलासिक बान का गवर्नर बनाया गया। यद्यपि यह बात थोड़े ही समय तक रही तो भी क्रोटियन जाति में कुछ राष्ट्रीयता का भाव उत्पन्न हो गया।

जितनी अधिक जर्मन और आस्ट्रियन राज्य की सत्ता क्रोटिया में दिखाई जाती थी। उतनी अधिक घृणा विदेशी राज्य के विरुद्ध पैदा होती जाती थी। उनकी सख्ती ज़्यादती आग में घी का काम करती थी।

लूडेविट गाज के कार्य को विशप स्ट्रासमेअर ने और फुर्ती तथा जोश से करना आरम्भ किया। यह विशप स्ट्रासमेअर एक साधु आदमी था। उसके देश-हित के सिवा और इच्छा न थी। उसने अपने देशवासियों से अपनी भाषा, सभ्यता और इतिहास की बातों को कायम रखने की प्रार्थना की। उसी की सहायता

और परिश्रम से ज़ाग्रेब में एक यूनिवर्सिटी और एक साइन्स की एकेडेमी खोल ली गई। इस प्रकार यूगोस्लैव जाति का भविष्य उज्जवल हो गया।

सन् १९१४ की लड़ाई के आरम्भ से ही सर्वियन सरकार ने घोषणा कर दी थी कि वह केवल अपने लिये ही नहीं लड़ रही है वरन् वह सारी यूगोस्लैव जाति की स्वतंत्रता के लिये लड़ रही है। इस बात को ये लोग कभी नहीं भूले और अंत में उनकी जीत निश्चित हो गई दिसम्बर सन् १९१८ ई० में सर्ब, क्रोट और स्लोवेन जातियां मिला कर एक राज्य स्थापित कर दिया गया।



ज़ाग्रेब नगर

ज़ाग्रेब नगर क्रोटिया प्रान्त की राजधानी है। यहाँ के निवासियों को अपने नगर पर बड़ा गर्व है। इस नगर की बनावट और इसके मकानात की कारीगरी पर आस्ट्रियन सभ्यता क्रोटियन पर लादी गई थी, तो फिर उससे उनका लाभ हुआ है। उसी की बदौलत उन्होंने अपनी कला-कौशल और सभ्यता की उन्नति दी।

ज़ाग्रेब नगर की सड़कों और गलियों में फ़र्श-बन्दी की हुई है। यह देखने में बड़ी भली मालूम होती हैं और यात्री इनको देख कर बड़े प्रसन्न होते हैं। इनकी कारीगरी को देख कर प्रतीत होता है कि इसके अन्दर सचमुच कोई ठोस वस्तु है। इनकी कारीगरी बड़ी सुन्दर है। स्मारक आदि जो इन सड़कों पर बने हैं। वे ऐसे ढंग से बनाये गये हैं कि उनसे सड़कों की सुन्दरता नष्ट नहीं होती वरन् और बढ़ जाती है।

क्रोटिया प्रान्त में ज़ाग्रेब व्यापार तथा कारोबार का केन्द्र है। यहाँ पर बड़े बड़े कारीगर, चित्रकार शिल्पकार और लेखक रहते हैं। इन लोगों की अपनी एक अलग दुनिया है। जाड़े के दिनों में नगर के अन्दर

बड़ी चहल पहल रहती है। सारे नगर में नाच, गान और तमाशे होते हैं।

यह नगर एक सुन्दर प्रदेश में स्थित है। इस नगर का एक भाग पहाड़ और जंगल की ओर फैला हुआ है। और दूसरा भाग सावा नदी की घाटी की ओर फैला हुआ है। नगर के अन्दर कैथेड्रल, चर्च और प्राचीन सुन्दर स्मारक हैं। यहां बिशप का महल देखने योग्य है। इसके चारों ओर ऊँची दीवाल (रैम्पार्ट) घिरी हुई है।

नगर का ऊपरी भाग एक मज़बूत दीवार से घिरा था। जिसमें बहुत से गुम्बद और दरवाज़े थे। अब भी वे मौजूद हैं। यहां पर दूकाने बहुत कम हैं और आने जाने की भीड़ भी बहुत कम रहती है। यहां तक लोग टहलने के लिये आते हैं। इस भाग में बिशप स्ट्रास मेअर की याद में एक बिहार-स्थान बनाया गया है। इसी स्थान पर ६०० साल का बना हुआ एक प्राचीन महल है। नगर के निचले भाग में बानजेलासिक नामक प्रसिद्ध चौराहा है। इस चौराहे के मध्य में क्रोटिया के गवर्नर की मूर्ति स्थापित है। यह स्थान ज़ाग्रेब भर में

सर्वोत्तम है, क्योंकि यहां पर प्रधान बाज़ार लगता है। प्रत्येक छोटी दूकान के ऊपर एक स्वेत छाता दिखाई पड़ता है। यह वर्षा और धूप से बचने के लिये होता है। रविवार और दूसरे छुट्टियों के दिनों पर बाज़ार में किसानों और दूसरे लोगों की बड़ी भीड़ रहती है। लोग रंग बिरंगे कपड़े पहन कर आते हैं। बहुत से लोग तो भेड़ों की खाल का चोगा पहन कर आते हैं। यह चोगे बड़े वज़नी और मोटे होते हैं। स्त्रियों के कपड़े बड़े चमकीले और सुन्दर होते हैं। उनकी सफेद अस्तीनें हवा में उड़ा करती हैं। चोगे के ऊपर जो बन्द रहता है वह रंग बिरंगा होता है और वह हवा में उड़ता रहता है।

ज़ाग्रेब की आर्ट गैलरी में बिशप स्ट्रास मेअर की दी हुई तसवीरें हैं जिनकी कला बड़ी अनोखी है। बनवाया हुआ विश्व विद्यालय भी है जो शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र है।

यहां पर एक सुन्दर थियेटर भी है। पास की पहाड़ियों में सुन्दर हवा खाने के लिये स्थान हैं। बेल्ग्रेड से यह नगर अधिक सुन्दर और रहने योग्य है।

देश दर्शन

"प्रीवरेडनिक" एक उपकारी संस्था

प्रीवरेडनिक का नाम रोज़ी कमाने का होता है। यहां पर कुछ ऐसी परोपकारी संस्थायें हैं जिनका उद्देश्य बालकों और बालिकाओं को ऐसा बना देने का रहता है जिससे पैसा कमा कर अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

प्रीवरेडनिक संस्था ३० वर्ष हुये कि जाग्रव नगर में स्थापित हुई। इसकी नींव एक क्रोशियन ने डाली थी। उसने देखा कि बाहरी (आस्ट्रिया हंग्री) प्रभाव उसके देश पर बहुत बुरा पड़ रहा था। उसे भय मालूम हुआ कि कहीं उसके देश की राष्ट्रीयता का नाश न हो जाय। उसके देश का सारा कारोबार दूसरे के हाथों न चला जाय। इसलिये उसने यह संस्था खोली और लोगों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करने लगा।

यूगोस्लेव सौदागरों की सहायता से इस संस्था ने कार्य आरम्भ किया। दूर दूर गाँव से बालक और बालिकाएँ लाये जाते थे। और उन्हें व्यापार करना सिखाया जाता था। उनके दिलों में राष्ट्रीयता भी कूट कूट कर भरी जाती थी। उसके बाद उनके रहने के लिए

स्थान बनाया गया फिर उन्हें भाषा, कला-कौशल और कारीगरी की भी शिक्षा दी जाने लगी।

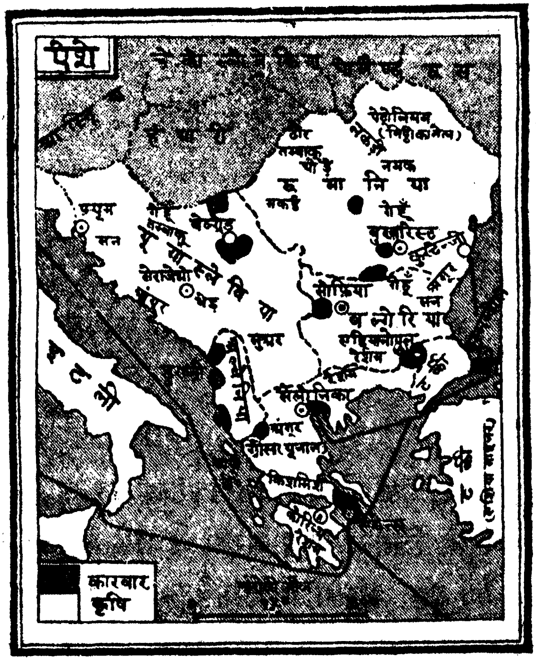
जब आस्ट्रिया-हंग्री को इस संस्था के उद्देश्य का पता चला तो वह इसके तोड़ने का उपाय करने लगे। इसलिये इस संस्था का अधिकांश काम छिपे तौर पर होता था। इसके संस्थापक को पूर्ण विश्वास था कि देश का कारोबार ठीक करने और कला-कौशल को उन्नति देने से अवश्य देश स्वतंत्र हो जावेगा। ज़ाग्रेव के निवासी बड़े देश प्रेमी और उत्साही हैं। संस्थापक को सौभाग्य वश वह दिन देखने को मिल गये जब उसने सारी स्लोव जाति को एक सूत्र में संगठित पाया।

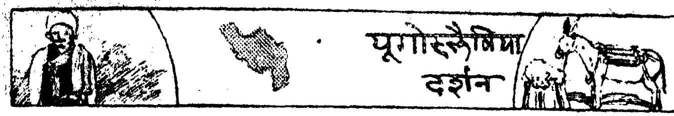
१९१४ के युद्ध में इस संस्था के अधिक से अधिक सदस्यों ने भाग लिया और आ कर सर्बियन सेना में भरती हो गये। आस्ट्रियन सेना में कोई भरती ही नहीं होता था।

यह संस्था लोगों को धन इकट्ठा करना सिखाती थी। इसमें जो जितना जमा करता है उसे उसका दुगुना मिलता है। इस संस्था में एक बैङ्क भी है। जब लोग काम सीख कर संस्था के बाहर आते हैं तो उन्हें इस

बैंक से बहुत कम सूद पर रुपया उधार मिलता है। इसी रुपये से लोग व्यापार करते हैं।

इस तीस साल की अवस्था में इस संस्था ने बीस हज़ार लड़के और लड़कियों को इस योग्य बना दिया है, कि आज वह आराम के साथ कमाते खाते हैं। अब इस संस्था का प्रधान केन्द्र बेल्ग्रेड हो गया है।





स्लोवेनिया का इतिहास

स्लोवेनिया प्रान्त में पर्वत, हरी घाटियां, जंगल, उपजाऊ मैदान, झीलें, नदियां आदि सभी वस्तुयें पाई जाती हैं। इस प्रान्त के कुछ भाग स्विटज़रलैण्ड की तरह सुन्दर हैं। यद्यपि आल्प्स पर्वतों की भांति वहां के पर्वतों पर बरफ नहीं जमा रहती तो भी इसके एक या दो चोटियों पर सदैव बरफ जमा रहती है। छुट्टियों का समय बिताने के लिये यह एक आदर्श प्रान्त है।

प्राचीन काल में स्लोवेनी लोग स्वतंत्र थे। ये लोग आनन्द पूर्वक अपने दिन व्यतीत करते थे। अपने बीच से यह लोग अपना राजा भी चुन लेते थे। कभी कभी पड़ोसी देशों से युद्ध भी करना पड़ता था। कुछ समय के बाद इनसे और चेक लोगों से संधि हो गई और दोनों का एक शक्तिशाली राज्य स्थापित हो गया।

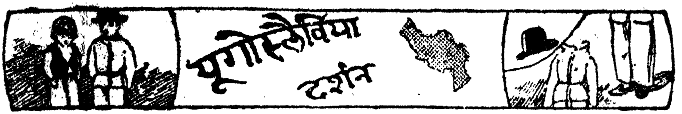
अभाग्यवश आठवीं शताब्दी के मध्य में इनकी स्वतंत्रता छिन गई। उस समय यहाँ के लोगों को बैरियों से भय हुआ तो इन लोगों ने बवेरिया (जर्मन) के निवासियों से सहायता मांगी। बवेरिया ने सहायता दी और बैरियों को मार भगाया। जब बैरी न रह गये।

तो जर्मन लोगों ने स्लोवेनिया प्रान्त जोड़ने से इन्कार किया। इसके पश्चात् स्लोवेनियन और जर्मन लोगों में कई लड़ाइयां हुईं किन्तु उनसे कोई लाभ न हुआ। दोनों जातियों में बिद्रोह बढ़ता ही गया। २० वीं शताब्दी के आरम्भ काल तक यहां पर जर्मनी का अधिकार रहा।

इस देश में जब जर्मनी का राज्य स्थापित हुआ तो ईसाई मत का वहां प्रचार हुआ पहले यहां के निवासियों ने इसाई मत नहीं माना किन्तु बाद को वह भी इस धर्म के सैनिक होकर लड़ने लगे।

नवीं शताब्दी के अन्त में स्लोवेनी, सर्व और क्रोट लोगों ने अपने नेता लुडेविट-पोसवस्की की अध्यक्षता में विद्रोह किया। परन्तु बाद को दबा दिये गये। यह पहला समय था जब यह दोनों जातियां एक साथ मिल कर बैरी के विरुद्ध खड़ी हुई थीं।

इस घटना के बाद जर्मनी के उच्च श्रेणी के लोग यहां आकर बस गये। फ्रैंक (जर्मन) लोगों ने अपने ढंग का राज्य शासन यहां आरम्भ किया। इस प्रकार



यहां के निवासियों की स्वतंत्रता की रही सही आशा भी जाती रही।

हर एक प्रकार के दुख और तकलीफ सहते हुये भी इन लोगों ने कारनिवोला की डची को स्थापित किया। यह थोड़े ही समय के पश्चात टूट गई। १२७३ ई० में रुडाल्फ हैब्सबर्ग जर्मनी का राजा हुआ तो स्लोव लोगों पर और अधिक अत्याचार होने लगे।

पन्द्रहवीं सदी के आरम्भ से ही तुर्कों ने यूगोस्लेविया पर आक्रमण करना आरम्भ किया। जर्मन लोगों ने स्लोव लोगों को उनका मुकाबिला करने के लिये अकेले ही छोड़ दिया। और किसी प्रकार की सहायता नहीं दी। स्लोव और क्रोश लोग एक हो गये और उन्होंने मिलकर कई सौ सालों तक तुर्कों का सामना किया इस प्रकार दोनों जातियों को एक साथ मिलकर लड़ने का परिणाम यह हुआ कि इनमें घनिष्ट प्रेम पैदा हो गया।

उच्च श्रेणी वालों के अत्याचार और तुर्कों के बार-बार आक्रमण होने के कारण यहां के ग़रीब किसानों और मज़दूरों की दशा बड़ी शोचनीय हो रही थी। सन् १५१५ ई० में गरीब लोगों ने उच्च श्रेणी वालों के

विरुद्ध विद्रोह किया किन्तु वह विद्रोह बाद में दबा दिया गया। इसके बाद स्लोवेनीज़ और कोश दोनों जातियों ने मिल कर विद्रोह की आग भड़काई किन्तु उसमें भी उन्हें हार माननी पड़ी।

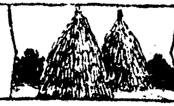
जिस समय तुर्कों से युद्ध हो रहा था, उस समय बहुत से सर्ब, बोसनी, हरज़ेगाविनी और मैकेडोनी लोग आकर स्लोवेनिया में बस गए। यह लोग यहाँ आकर यहाँ के निवासियों के साथ बिलकुल हिल-मिल गए। इसका बाद को बड़ा अच्छा परिणाम हुआ।

सोलहवीं शताब्दी में प्रोटेस्टेन्ट मत का प्रचार स्लोवेनिया में आरम्भ हुआ। इस मत को यहां के निवासियों ने बड़े हाव-भाव के साथ स्वीकार किया। सभी लोग रोमन कैथलिक चर्च और उसके पादरियों के अत्याचार से परेशान हो गए थे, इसलिये शीघ्र ही इस मत का प्रचार ज़ोरों से आरम्भ हो गया। धार्मिक पुस्तकें देशी भाषा में लिखी जाने लगीं। बाइबिल का अनुवाद भी स्लोवेनी भाषा में किया गया। इसी समय स्लोवेनी भाषा की व्याकरण भी लिखी गई। इस प्रकार स्लोवेनी भाषा की वृद्धि काफी हुई।



यूगोस्लैविया दर्शन





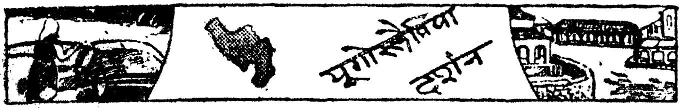
१५६० ई० से १६३७ तक ड्यूक फर्डिनेन्ड जर्मनी का चक्रवर्ती राजा रहा। यह राजा प्रोटेस्टेन्ट धर्म के विरुद्ध था। इसलिये जितने स्कूल और संस्थाएँ इस धर्म की थीं उसने सभी को तोड़ दिया। इस मत के पचारकों और उपदेशकों को देश से निकाल दिया गया। किताबें आग में जला दी गईं। इस राजा की सहायता रोमन कैथलिक और जेसविट लोगों ने किया। इस से यहां की भाषा को बड़ा धक्का पहुँचा। यहां की भाषा जर्मन अथवा लैटिन कर दी गई। अठारहवीं शताब्दी में मैरियाथेरिसा और जोज़फ द्वितीय के समय में फिर यहां की भाषा को प्रोत्साहन मिला इस समय राष्ट्रीयता का भाव भी इतना बढ़ चुका था, कि उसका दबाना कठिन था।

नैपोलियन के समय में स्लोवेनिया और यूगोस्लेविया को काफी प्रोत्साहन मिला। १८०६ में नैपोलियन ने आस्ट्रिया को बुरी तरह हराया और इलीरिया का राज्य स्थापित किया। इस राज्य की राजधानी जुबलीजना (Ljubljana) चुनी गई थी। नैपोलियन स्वयं वहां कुछ दिनों तक रहा था। यह समय स्लोवेनिया के लिये बड़ा हितकर हुआ। स्कूलों में स्लोवेनी भाषा पढ़ाई

जाने लगी। पत्रिकाएँ और अखबार राष्ट्रीय भाषा में निकलने लगे। देश-प्रेम और राष्ट्रीयता का भाव देश वालों के दिलों में जोश मारने लगा और यूगोस्लाव जाति को संगठित करने की बात सोची जाने लगी।

किन्तु फिर जर्मन लोगों का अधिकार यहां पर हो गया और उन्होंने फिर अपना अत्याचारी राज्य आरम्भ किया। यह प्रबन्ध थोड़े ही समय तक चल सका। राजनैतिक कारणों से देश की दशा बहुत कुछ सुधर चुकी थी। इसलिये १८८२ ई० में यहां की राष्ट्रीय भाषा का प्रयोग जर्मन भाषा की भांति स्कूलों और कचेहरियों में होने लगा।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में स्लोवेनियन, सर्ब और यूगोस्लेवेनियन तीनों जातियों के संगठित करने का कठिन परिश्रम होने लगा। १९१२ ई० में जब बलकान युद्ध हुआ तो स्लोव जाति के संगठन करने और एक स्वतंत्र राज्य बनाने की माँग माँगी गई। अन्त में १९१४ की लड़ाई के पश्चात् इनको समय मिला और स्लोव, सर्व, यूगोस्लोव और क्रोश जातियों को मिलाकर एक स्वतंत्र राज्य यूगोस्लेविया बना दिया गया।



जुबलीजना (Ljubljana)

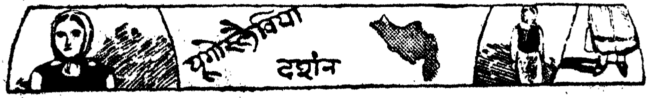
यह एक पुराना नगर है। यह नगर स्लोवेनिया की राजधानी है। यह स्लोवेनियन आल्प्स के ऊपर भ्रमण वाले मार्ग का पहला स्टेशन है और यूगोस्लेविया से बाहर जाने वाले यात्री का यह (इस देश का) अंतिम प्रसिद्ध स्थान है। यहां पर यात्री देश के बाहर जाते और अन्दर आते समय रुकते हैं। आल्प्स पर्वत के यात्री भी जाते आते समय यहाँ अवश्य रुकते हैं।

जुबलीजना नगर की बनावट देख कर पता चलता है कि नगर मध्यकालीन कलाकौशल का एक चित्र है। नगर के अन्दर वर्तमान काल की आवश्यक वस्तुएँ भी मौजूद हैं। उस नगर में दो बड़े आधुनिक होटल हैं। थियेटर, सिनेमा और दूसरे आमोद प्रमोद के स्थान भी नगर में हैं। इस नगर की दूकानें सुन्दर प्रतिभाशाली हैं। नगर के समीप ही सुन्दर वायुसेवन करने के स्थान हैं। यहाँ की प्राचीन गलियों का दृश्य बड़ा ही लुभावना है। जब यात्री उन गलियों में से निकलता है तो अचानक उसकी दृष्टि द्वारों के भीतर किसी हरियाले स्थान पर पड़ जाती है। अन्दर सुन्दर पार्क तथा वाटिकाएँ

हैं, जो सड़कों के इधर उधर बनाई गई हैं। इनके दर्वाज़ों, खम्भों और महराबों की कलाकौशल बड़ी ही सुन्दर है। यह कारीगरी इस देश का पुराना इतिहास बताती है।

यूगोस्लेविया के दूसरे नगरों की भाँति जुबलीजना नगर में भी बाज़ार हैं। इन बाज़ारों में हर प्रकार की आवश्यक वस्तुएं मिल सकती हैं। बाज़ार में हर प्रकार के फल, तरकारियों और दूसरी खाने की वस्तुओं के ढेर लगे रहते हैं। बेचने वाले अपनी अपनी दूकानों पर बैठे हँसते हुये सामान बेचते रहते हैं। उनके बोलने का ढँग और भाव ऐसा होता है कि खरीदार को इन्कार करना कठिन हो जाता है।

जुबलीजना नगर के बीच होकर एक नदी बहती है। इस नदी पर पत्थर का एक पुल है, जो नगर के दोनों भाग को मिलाता है। नगर के बाहर सड़कों और मकानों के ऊपर पहाड़ी पर एक सुन्दर क़िला है। यह प्राचीन काल का बना हुआ है और नगर तथा घाटी की रक्षा करता है। इस क़िले की मध्य कालीन कला बड़ी सुन्दर है।



नगर में एक घोड़े वाली गाड़ी का अधिक प्रयोग होता है। इन गाड़ियों का किराया घंटे के हिसाब से होता है। मोटर कार लारियाँ आदि भी नगर में चलती हैं। नगर से सुन्दर सड़कें बाहर की ओर जाती हैं। यदि हम इन सड़कों में होकर लम्बी यात्रा करें तो हमको यह लम्बी सड़कें जंगल की ओर ले जावेंगी। हम जैसे जैसे दूर जाते हैं वैसे वैसे बन घने और वृक्ष बड़े होते जाते हैं। इन बनों में बड़े ही रमणीक दृश्य और सुन्दर स्थान हैं, जहां जाकर यात्री नगर की सारी थकावट और कष्ट भूल जाता है।

देश दर्शन

स्लोवेनिया देश की छुट्टियां

स्लोव लोग अपने पर्वतों को बहुत प्यार करते हैं। लड़के, बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री-पुरुष सभी इन पर्वतों पर टहलने जाते हैं। छुट्टी के दिनों में लोग बड़े सवेरे अपने घरों से स्टेशन की ओर चल देते हैं। जिससे सारा दिन वे पहाड़ों के ऊपर व्यतीत कर सकें। यह लोग अपनी पीठ पर सिपाहियों वाला बड़ा झोला लटकाये रहते हैं। इस झोले में वे अपने आवश्यक सामान भरे रहते हैं।

जुबलीजना नगर से रेलगाड़ी यात्रियों को ले जाकर स्लोवेनिया के ऊँचे पहाड़ी प्रदेश के मध्य में उतार देती है। यहां से यात्रियों को पहाड़ पर पैदल चढ़ना पड़ता है। सभी ओर के मार्ग अलग अलग रंगों द्वारा सूचित किये गये हैं। इससे किसी यात्री को मार्ग भूलने की शंका नहीं होती। स्लोवेनियन माउन्टेनियरिंग क्लब की ओर से इन पहाड़ियों पर यात्रियों के ठहरने के लिये झोपड़े बने रहते हैं। इन लकड़ी के झोपड़ों तक पहुँचने में यात्री को अच्छा आनन्ददायक अनुभव होता है। जिस प्रकार मरु-प्रदेश में चलते चलते जब मनुष्य को

ओसिस मिल जाता है। तो उसके खुशी का पारावार नहीं रहता है। उसी प्रकार जब पहाड़ पर चढ़ते चढ़ते लोग थक कर परेशान हो जाते हैं, उनमें चलने की शक्ति क्षीण हो जाती है और उन्हें लकड़ी के झोपड़े दिखाई पड़ते हैं, तो उनके जान में जान आ जाती है।

इन पहाड़ी झोपड़ों की बनावट बड़ी प्राचीन ढंग की होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि जितना भी सामान इनके बनाने में लगता है वह सभी नीचे से आदमियों की पीठ पर ऊपर आता है। इन झोपड़ों में एक रसोई घर और एक दूसरा सोने का कमरा होता है। सैन-गृह के अन्दर चारपाइयाँ नहीं रहतीं, केवल कुछ तख़्ते होते हैं। जिनके ऊपर पियरल या घास की चटाइयाँ बिछी रहती है और कुछ कम्बल ओढ़ने के लिये रक्खे रहते हैं। किसी किसी झोपड़े में एक और कमरा होता है जहाँ पर बाहरी यात्रियों को ठहराते हैं। इन स्थानों पर एक संतरी हमेशा अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद रहता है जो लोगों को जलाने के लिये लकड़ी और पानी देता है।

सवेरा होते ही सभी यात्री उठ जाते हैं। चारों

ओर झोपड़ों में चहल पहल मच जाती है। लोग अपने कील दार जूतों को पहनते हैं। वे लोग चाय व कहवा बना कर पीते जाते हैं और आपस में हँसी मज़ाक भी होता जाता है। इसके पश्चात् सभी अपना अपना सामान लेकर यात्रा के लिये निकल पड़ते हैं।

यहां कहीं कहीं पर आस्ट्रियन लोगों के बनाये हुये सुन्दर झोंपड़े हैं। इनमें चारपाई इत्यादि सोने के लिये होती हैं और हर प्रकार का आवश्यक सामान रहता है। यह स्थान पहाड़ों की बड़ी ऊँची चोटियों पर है जहाँ से दूर दूर का पहाड़ी दृश्य दिखाई पड़ता है। यहाँ पर नीचे की घाटियों (पुष्प वाटिकाओं) से सुन्दर फूलों की सुगन्ध आती रहती है।

ट्रग्लाव पर्वत की श्रेणियाँ पहाड़ों पर घूमने वालों या पहाड़ों पर चढ़ने वालों के लिये बड़ी उपयुक्त हैं। यहां ऊँची चोटियों के समीप कहीं कहीं बरफ सदैव जमी रहती है और कभी नहीं पिघलती। इन स्थानों की हवा इतनी सुन्दर है कि चढ़ने में किंचित मात्र भी थकावट नहीं लगती और न तबीयत परेशान होती है। इन श्रेणियों की कुछ चोटियां ऐसी हैं जहां सभी लोग

आसानी से चढ़ सकते हैं किन्तु कुछ चोटियां ऐसी भी हैं जिन पर अच्छे पहाड़ी लड़ाकू ही चढ़ सकते हैं।

वसन्त ऋतु और गरमी के आरम्भ में निचले ढालों पर भाँति भाँति के फूल खिलते हैं और नीचे घाटियों में सुन्दर हरी घास के मैदान हो जाते हैं। पेड़ों और पौदों में फल भी होते हैं। सभी यात्री जब घूम कर लौटते हैं तो मार्ग से कुछ न कुछ अवश्य ही ले आते हैं।

जो लोग अपनी छुट्टियां नहाने, बोट यात्रा करने या मछली मारने में व्यतीत करना चाहते हैं। उन लोगों के लिये यहाँ पर सुन्दर झीलें हैं जहां पर वे आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत कर सकते हैं। ब्लेड झील पहाड़ों के बीच में एक हरे मणि की भांति स्थित है यह झील बड़ी ही सुन्दर और सुहावनी है इसके बीच में एक बड़ी चट्टान(लम्बाकार) है इस चट्टान पर एक गिरजा घर है। वहां के लोगों का कहना है कि अगर हम इस गिरजे के घंटे की डोर को एक बार खींचें और तीन बार टन-टन का शब्द हो तो हमारी मनोकामना अवश्य पूरी हो जाती है। यहां दिन रात यात्री आकर अपने भाग्य की परीक्षा करते रहते हैं।

इसी झील के किनारे युगोस्लेविया के राजा-रानी का महल है। पास ही नीचे ढालों पर बड़े बड़े आदमियों, राजनीतिज्ञों और मंत्री गणों के बंगले हैं। इन लोगों की भीड़ सदैव झील में लगी रहती है। छुट्टियाँ मनाने वाले पानी के अन्दर सुन्दर धूप में आनन्द मनाते रहते हैं।

इसी प्रकार की एक दूसरी बोहाइन झील है। यह झील कुछ सुनसान भाग में स्थित है। यहाँ पर जो लोग खामोशी से अपनी छुट्टियाँ बिताना चाहते हैं वही आते हैं। इसका पानी ब्लेड झील के पानी से अधिक ठंडा और साफ है। गहरे से गहरे भाग की कंकड़ी भी साफ-साफ दिखाई पड़ती है। सुवरों के बच्चे इधर उधर पानी में तैरते रहते हैं। मछलियाँ भी पानी के भीतर सुन्दर तैरती दिखाई पड़ती हैं। इस झील में यहाँ की सरकार की ओर से मछली मारने की मनाही है। यहाँ पर होटल भी हैं जहाँ यात्री ठहरते हैं।

क्रेन्सकागोरा की चोटी ३००० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ पर बहुधा लोग अपनी छुट्टी का समय व्यतीत करने आते हैं। इस स्थान की जलवायु







स्वास्थ्यदायक है, किन्तु सादा जीवन व्यतीत करने वाले ही यहाँ रह सकते हैं।

जाड़े के दिनों में जब बरफ पहाड़ों पर पड़ जाती है तो यहाँ के निवासी 'स्की' (बरफ पर फिसलने की लकड़ी) लेकर पहाड़ों के ऊपर बरफ पर फिसलने और दौड़ने के लिये चले जाते हैं।

देश दर्शन

ओज्वोडीना

ओज्वोडीना का अर्थ जागीर का है। जब आस्ट्रिया-हँग्री वालों का यहाँ राज्य था तो एक बार आस्ट्रिया-हँग्री की सरकार ने यहाँ के निवासियों (सर्ब लोगों) को अपना ड्यूक चुनने के लिये कहा था। उसी पर इस प्रान्त का नाम ओज्वोडीना पड़ा।

यह एक लम्बी भूमि की पट्टी सावे और डैनूब नदी के उत्तर की ओर स्थित है। इस प्रदेश में स्रेम, बाटचका, बारंजा और बानात के प्रान्त सम्मिलित हैं। इस पाठ में इसी प्रान्त का इतिहास वर्णन किया गया है।

ओज्वोडीना के निवासी सर्ब जाति के हैं। यह लोग सावे और डैन्यूब नदियों द्वारा अपने दक्षिणी भाइयों (सर्ब) से अलग हो गये हैं। इन लोगों ने सर्ब जाति की स्वतंत्रता के लिये बड़ा प्रयत्न किया था।

स्लाव जाति छठवीं शताब्दी में बलकान प्रायद्वीप में आकर बसी। इनमें से कुछ सावे और डैन्यूब नदी के उत्तर की ओर बस गये। कुछ समय के पश्चात् मगयार लोग आकर वहीं बस गये। वे कदाचित् सर्ब (स्लाव)

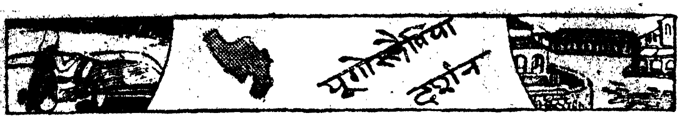
जाति को दक्षिण की ओर ढकेल देते किन्तु इसी समय तुर्कों का आक्रमण हुआ और मगयार लोग अपना स्थान छोड़कर चले गये। कोस्माओ की लड़ाई के बाद सर्ब लोग हँग्री के दक्षिण जा बसे। धीरे धीरे इस भाग की जनसंख्या बढ़ती ही गई। हंग्री का बादशाह मैट्यू सर्ब सिपाहियों के ऊपर ही निर्भर करता था, इस लिये उसने सन् १४७० ई० में स्वराज्य दे दिया। जार्ज ब्रैनकोविच के पुत्र को (जो राज्य का राजा चुना गया था) हंग्री के राज्य ने 'डिस्पाट' की पदवी दी। यह अंतिम सर्ब राजा था।

सर्ब जाति अपनी बहादुरी की बदौलत ही स्वतंत्र हुई है। यदि इस जाति ने लड़ाई के समय आग में कूद कर अपनी जान खतरे में न डालते तो कभी उनको स्वतंत्रता के दिन देखने को प्राप्त न होते। हँग्री और आस्ट्रिया राज्य सदैव लड़ाई के समय सर्ब जाति से सहायता लेते थे और उनके देश में सुधार करने तथा उनकी मांगें पूरी करने का वचन देते थे। किन्तु जब लड़ाई का खतरा न रह जाता था तो अपने वादों को भूल जाते थे और इस प्रकार ओज्वोडीना में दोअमली हुकूमत हो रही थी।

सर्बियन साम्राज्य के छिन्न भिन्न हो जाने पर ओज्वोडीना की नींव पड़ी। तुर्कों के हमले होने के कारण सर्ब लोग अपनी सभ्यता के साथ हँग्रो के दक्षिण जा बसे। उन लोगों ने और दूसरी जातियों के होते हुये भी अपनी सभ्यता की रक्षा की और उसे उन्नति दिया। इसी कारण आज वे आधुनिक सभ्यता की ओर ज़ोरों से बढ़ रहे हैं।

यहाँ के निवासियों को अपने आरथोडाक्स चर्च के धर्म को रोमन कैथलिक्स से बचाने के लिये भी बड़ी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। इन लोगों ने यह होशियारी की कि अपने मठ खूब बनाए। इन मठों के कारण इनका धर्म नहीं मिट सका।

सर्ब लोग अपने देश को छोड़ हँग्री के दक्षिण इसलिए आ बसे थे कि वह अपने देश की स्वतंत्रता प्राप्त कर सकेंगे। सोलहवीं शताब्दी में तुर्कों का फिर आक्रमण हुआ। १६८३ ई० में तुर्क लोगों ने सब रहा सहा राज्य बर्बाद करते हुये और आगे बढ़े और वियना को जाकर घेर लिया। इस बात से तमाम योरुप में खलबली मच



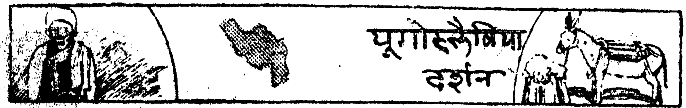
गई और पोलैण्ड के राजा जान सोबेस्की ने आकर वियना की रक्षा की। उसने तुर्कों को मार भगाया।

इस बीच ओज्वोडीना प्रदेश के निवासी अपनी उन्नति में लगे हुये थे। इन लोगों ने अपने कारोबार, व्यापार, कलाकौशल, शिक्षा आदि को उन्नति दी। यह लोग सोने चाँदी का काम, बेलबूटा का काम, लकड़ी की नक्क़ाशी तथा सँग तराशी का काम बहुत अच्छा जानते थे। अब तक उस समय की बहुत सी वस्तुयें मौजूद हैं। इसी प्रान्त में पहले पहल सर्ब भाषा के स्कूल खोले गये। पत्र तथा पत्रिकायें निकाली गईं और राष्ट्रीयता तथा संगठन का भाव उत्पन्न किया गया।

१६९० ई० में पैट्रियार्क चारनोजेविच की अध्यक्षता में सर्व लोगों ने अपनी मांगों और स्वतंत्रता के लिये सिर उठाया। हंग्री ने भी दृढ़ता दिखाई और सर्ब लोगों के देश प्रेम, सभ्यता तथा राष्ट्रीयता के भाव को सदा के लिये कुचलना चाहा। उन्होंने सर्ब जाति को बिलकुल हंग्री जाति में मिला देना चाहा। किन्तु सर्ब जाति ने इसका बिरोध खुल कर किया।

करा-जार्ज और प्रिन्स मोलिश के समय बहुत से सर्ब अपने देश को वापस चले आए और यहाँ आकर अपनी भाषा तथा राष्ट्र को दृढ़ बनाने लगे। वे आधुनिक लड़ाई लड़ चुके थे। इसलिये लड़ाई लड़ना अपने भाइयों को भी उन्होंने सिखाया। इस प्रकार इन लोगों ने अपनी सभ्यता, विद्या और कलाकौशल को उन्नति की ओर बढ़ाया।

आज ओज्वोडीना यूगोस्लेविया का प्रान्त है और स्लाव जाति इस बात को स्वीकार करती है कि ओज्वोडीना के निवासियों की बदौलत ही उन्हें अपनी स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।



बोसनिया और हर्ज़ेगोविना का प्राचीन इतिहास

चालीस वर्ष पहले बोसनिया और हर्ज़ेगोविना के निवासी योरुप से बिलकुल अलग थे और यहां पर मध्य कालीन सभ्यता प्रचलित थी। आज भी इन प्रान्तों में मध्यकालीन सभ्यता प्रचलित है। इस देश में प्राकृतिक सुन्दरता बहुत है। यहां पर तुर्कों का राज्य रहा, इसलिये इस पर योरुप का बहुत कम प्रभाव पड़ा है। इन दोनों प्रान्तों के निवासी अब भी अपने पुराने ढंग के भड़कीले कपड़े पहनते हैं और इनमें वही सुन्दरता अब भी मौजूद है।

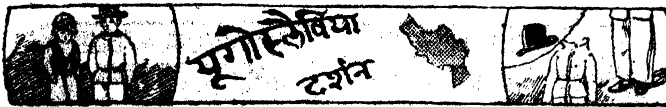
बोसनिया उपजाऊ, धनी और हरा-भरा प्रान्त है किन्तु हर्ज़ेगोविना उजाड़ और बंजर है। यहां के निवासियों को अपनी जीविका बड़े संकट के साथ चलानी पड़ती है। पहाड़ी भूमि में खेती करने में यह लोग बड़ा परिश्रम करते हैं तो भी यहाँ पैदावार कम होती है और बहुधा काल पड़ता है। अगर इनको बाहर से सामान लेने भेजा जावे तो वह लोग भूखों मर जायँ।

इस प्रान्त में पानी की भी बहुत कमी है। यहाँ के किसान यहां के सभी नदी नालों से अपना काम निकालते हैं। जहाँ कहीं भी नदी होती है वहां पर तम्बाकू और ज्वार की खेती होती है। यहां की नदियों में यह बात पाई जाती है कि वह एकाएक सूख जाती हैं और फिर एक एक ऊपर आकर बहने लगती हैं।

इस बंजर तथा उजाड़ पहाड़ी प्रदेश में कहीं कहीं प्राचीन नगर और गांव मिलते हैं। यह नगर तथा गांव बड़े ही सुन्दर हैं। ऊँचे पहाड़ों पर बहुत से क़िले स्थित हैं। यहां के निवासी लम्बे और सुकुमार होते हैं। इन लोगों के अन्दर.आत्म गौरव का भाव पाया जाता है।

बोसनिया प्रान्त का नाम बोसना नदी के नाम पर पड़ा है। इस प्रान्त में बहुत सी खानें और बड़े बड़े बन हैं। यहाँ की घाटियों में खूब पानी है और वे हमेंशा हरी भरी रहती हैं। इस प्रान्त की पहाड़ियों में घने बन हैं। यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है और हर प्रकार की खाने की वस्तुएँ पैदा होती हैं।

ईसा के चार सौ साल पूर्व बोसनिया पर सेल्ट लोगों का आक्रमण हुआ उसके बाद रोमन लोगों ने



दलमाशिया के तट पर अपना अधिकार जमाया, फिर उन्होंने बोसनिया और हर्जेगोविना प्रान्तों पर अपना अधिकार जमाया। इलीरियन और सेल्ट लोगों ने रोमन का सामना किया, किन्तु उन्हें हार हुई।

जब स्लोव जाति बाल्कन में आई थी तो उस समय का इन प्रान्तों का हाल ज्ञात नहीं है नवीं शताब्दी में यहां ईसाई धर्म का प्रचार हुआ। सीरिल और मिथोडियस नामक व्यक्तियों ने ईसाई धर्म का प्रचार किया। लोगों ने यहाँ के निवासियों को पढ़ना लिखना भी सिखाया।

ईसाई धर्म के साथ साथ यहाँ पर ईसाई धर्म के विरोधी बोगोमिल धर्म का भी प्रचार हुआ। बोगोमिल चर्च का कहना था कि लोगों को प्राचीन ईसाई मतों को मानना चाहिये और बिलकुल सीधा सादा जीवन व्यतीत करना चाहिये। यह धर्म प्राचीन ईसाई मत के क़िस्से कहानियों पर निर्धारित था और साथ ही साथ न्यूटेस्टमेन्ट (नई बाइबिल) को भी मानता था। इसी धर्म की बदौलत बोसनिया साम्राज्य स्थापित हुआ उसका नाश भी इसी के कारण हुआ। इस मत के मानने वाले इतने बली तथा शक्तिशाली थे कि

प्रोटेस्टेंट धर्म (रिफार्मेशन) को भी इस मत ने शक्ति प्रदान की।

कहा जाता है कि बागमिल मत का चलाने वाला बोगोमिल नामक व्यक्ति था किन्तु यह ठीक ठीक ज्ञात नहीं है कि इस मत का प्रचार किसने किया। इस मत की दृढ़ नींव सर्व जाति के बीच में दसवीं शताब्दी में पड़ चुकी थी और दिन प्रति दिन इस मत की शक्ति बढ़ती ही जाती थी। इन लोगों का विश्वास था कि दुनिया को किसी बुरी शक्ति ने बनाया है, क्योंकि यह दुनिया झूठी है। सत्य ईश्वर से झूठ पैदा ही नहीं हो सकता। वे सत्य प्रकाश (ईश्वर) की बनाई हुई दुनिया पर विश्वास करते थे किन्तु उनका कहना था कि वह दुनिया आँखों से ओझल है और हम इस झूठी दुनिया वाले उसे नहीं देख सकते। इसी लिये जितनी वस्तुएँ इस दुनिया की पैदा हैं उनको वे नहीं मानते थे। शादी करना, शराब पीना, मांस खाना, सुन्दर कपड़े पहनना आदि बातों को वे कहते थे कि यह शैतान की बुरी इच्छाएँ हैं इससे इन बातों को नहीं करना चाहिये। इस मत का मुख्य सिद्धान्त योग क्रिया थी।

तेरहवीं शताब्दी में यह धर्म उन्नति के शिखर पर था। हँग्री और दलमाशिया के तटीय प्रदेश के रोमन कैथलिक लोगों को इस धर्म से बड़ा भय प्रतीत होने लगा और वे लोग हथियार के बल इसका सामना करने के लिये तयार होने लगे।

उस समय बोसनिया का राजा बानकुलीन था। वह बोगोमिलियन धर्म का मानने वाला था। रोमन कैथलिक धर्म के अत्याचार से जो लोग अपना देश छोड़कर भागने लगे उनको इसने अपने देश में शरण प्रदान की। इस राजा के समय में यह धर्म फ्रान्स, इटली और इंगलैण्ड तक पहुँच गया।

हंग्री का राजा पोप का बड़ा मित्र था और उस समय कोलोमान क्रोशिया और दलमाशिया का गवर्नर था। सन् १२३३ ई० में वह बोसनिया के बोगोमिल मत वालों को दबाने के लिये भेजा गया। इसके साथ एक बड़ी सेना भी गई थी। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने बड़े जुल्म किये और ऐसा प्रतीत हुआ कि सचमुच बोगोमिल मत का नाश हो गया। किन्तु जैसे ही वह लौटा यह धर्म फिर वैसे का वैसा हो गया। इस धर्म को

मिटाने के लिये रोमन कैथलिक मत वालों ने सभी उपाय किये, लोगों को क़त्ल कराया, आजन्म कारागार में ठोंस दिया, आग में जलवाया, हाथ पैर कटवाये, किन्तु तो भी इस धर्म का नाम न मिटा और फिर फिर कर यह मत अंकुरित होता रहा।

बारहवीं शताब्दी तक बोसनिया सर्बिया के अधिकार में रहा। सन् १३५० ई० में जार दुशान बोसनिया और सर्बिया का राजा हुआ। कोसाओ की लड़ाई के पश्चात् उसने दलमाशिया और क्रोशिया प्रान्त भी मिला लिये। इसके समय में इन देशों में बड़ी उन्नति हुई। टित्ररटिको की मृत्यु के बाद बोगोमिल की शक्ति घटने लगी। बोसनिया और हर्ज़ेगोविना पर हंग्री का अधिकार हो गया। क्रोशिया और दलमाशिया को इटली और आस्ट्रो-हंग्री ने मिल कर बाँट लिया।

इस समय बोगोमिल धर्म को मिटाने के लिये हंग्री ने बड़ा प्रयत्न किया। उसने इन्क्वीज़ीशन (क़त्ल तथा फांसी) द्वारा काम लिया। इससे बोगोमिल का प्रचार कुछ समय के लिये रुक गया। किन्तु जैसे ही फ़ौजें

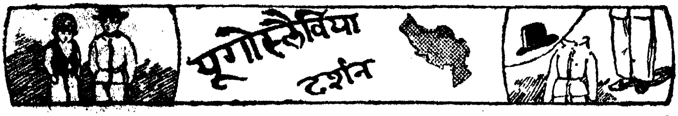
देश से हटाई गई। यह मत फिर बड़े वेग के साथ उठ खड़ा हुआ।

रोमन कैथलिक साधुओं ने अपने चमत्कार दिखा कर बोगोमिल मत वालों को अपने धर्म में मिलाना चाहा। यह लोग जादू का प्रयोग भी करने लगे। एक बार सन् १८७७ का क़िस्सा है कि एक रोमन कैथलिक साधु ने भयानक अग्नि के ऊपर चलकर दिखाया और जब वह अग्नि के बीच में पहुँचा तो वहाँ खड़ा हो गया और साम की किताब से कुछ पढ़कर सुनाया। यह लोग जो चमत्कार पुराने समय में दिखाये गए थे उन्हें फिर नक़ल कर दिखाने लगे किन्तु इन बातों का भी कोई बड़ा प्रभाव नहीं पड़ा।

जब बोगोमिल लोग रोमन कैथलिक लोगों की तलवार के घाट उतरते और आग में जलते जलते परेशान हो गये तो वे तुर्कों की ओर बढ़े कि शायद मोहम्मद के मानने वाले उनके साथ कुछ अच्छा बर्ताव करें। यह इसाई धर्म के ऊपर एक बड़ा काला धब्बा है कि उसके मानने वाले अपने स्वधर्मियों के अत्याचार से तंग होकर दूसरा मत ग्रहण कर लें।

तुर्कों ने बोगोमिल लोगों के बुलाने पर १४६३ ई० में हमला किया और बोसनिया के प्रसिद्ध नगरों और किलों पर अपना अधिकार जमा लिया। इसके बाद तुर्कों ने लगभग ४०० साल तक बोसनिया और हर्ज़ेगोविना पर राज्य किया इन्होंने अपने राज्य काल में बड़ा अत्याचार किया बोगोमिल लोगों को या तो इन्होंने तलवार के घाट उतारा या बहुत से लोगों को तुर्क बना लिया। इतना ज़ुल्म होते हुये भी इन लोगों ने अपना धर्म नहीं छोड़ा।

तुर्कों का अत्याचार इतना अधिक बढ़ा कि अन्त-काल योरुपियन लोगों की दृष्टि इस ओर गई। १८७६ ई० में बर्लिन की कांग्रेस हुई, उसमें यह तय हुआ कि आस्ट्रिया तुर्कों के अत्याचार को रोके। आस्ट्रिया ने अत्याचार को रोका और शान्ति स्थापित हुई। इन लोगों ने सुन्दर घर और बाग़ बनवाये और वहाँ के निवासियों को मिलाने के लिये हर एक प्रयत्न किये किन्तु आस्ट्रिया को भी स्वार्थ ने धर दबाया और उसने १९०८ में घोषणा की कि बोसनिया और हर्ज़ेगोविना प्रान्त आस्ट्रियन साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये गए।



यह बात वहाँ के निवासियों को बहुत बुरी लगी, सर्व जाति ने इससे अप्रसन्न होकर लड़ाई लेने की तयारी कर दी।

सेराजेवो नगर बोसनिया की राजधानी है। यहाँ के निवासी आस्ट्रियन के बहुत विरुद्ध हो ही गये थे, इसलिये एक नवजवान ने सेराजेवो की एक गली में आस्ट्रिया के आर्क-ड्यूक फर्डीनेन्ड को गोली से मार डाला। इस हत्याकाण्ड की बदौलत १६१४ की योरुप की बड़ी लड़ाई हुई जो बड़ी भयानक और दुखदाई हुई थी। अंत में बोसनिया और हर्ज़ेगोविना प्रान्तों को स्वतंत्रता प्राप्त हो गई।

देश दर्शन

सेराजेश्रो

सेराजेवो, बोसनिया की राजधानी है। यह नगर बड़ा सुन्दर और रमणीक है। एक बड़े लेखक का कथन है कि इस नगर की स्थिति योरुप भर में सब से सुन्दर है।

इस नगर के चारों ओर पहाड़ी श्रेणियाँ हैं। यह श्रेणियाँ कुछ तो हरी भरी हैं और कुछ उजाड़-बंजर हैं। इन श्रेणियों के नीचे मध्य में सेराजेश्रो नगर स्थित है। नगर के बाहरी भाग में बहुत अधिक गुम्बद और मसजिदें हैं और उनके दूसरी ओर बड़े बड़े चनार के बृक्षों की क़तार है। मसजिदों, गुम्बदों, गिरजों और मकानों के ऊपरी भाग आकाश की ओर ऊँचे उठे दिखाई पड़ते हैं।

मलजास्का नदी ने सेराजेवो नगर को दो भागों में बाँट दिया है। किन्तु नदी में लगभग ९ या १० पुल बनाए गए हैं जो नगर के दोनों भाग को मिलाते हैं। इस नगर की सब से अधिक आकर्षक वस्तुएं हमको बाज़ारों में मिलेंगी।

यहाँ का बाज़ार नगर का एक छोटा सा सुन्दर नमूना है। दूकानें छोटे छोटे मकानों में हैं। यह मकान वर्गाकार बने हैं, किन्तु इतना छोटे होते हुये भी इन घरों की कारीगरी बहुत अच्छी है। मकान रंग-बिरंगे रंगों से रंगे हैं। रोज़गारी लोग अपनी दूकनों पर बैठे बढ़िया कारीगरी को वस्तुएं बनाते रहते हैं। यहाँ के निवासी कहवा (काफी) के बड़े प्रेमी हैं और वे लोग दिन भर इसो को पीते रहते हैं।

यहाँ की बाज़ारों में एक दूकान से दूसरे दूकानों में घूमते हुये घन्टों लग जाता है, किन्तु यदि घूमने वाला चतुराई से काम न ले तो मार्ग भूल जाने का भय रहता है। बाज़ारों की गलियाँ बहुत तंग और छोटी हैं।

यहाँ के बाज़ार कई भागों में विभाजित हैं। और हर एक प्रकार का सामान एक मुख्य गली में बिकता है। जैसे अगर हमें जूता खरीदना है तो हमको जूते की दूकानों वाली गली में जाना होगा, और अगर कपड़ा खरीदना है तो कपड़े वाली दूकान पर जाना होगा। यहां की दूकानों में खिड़कियाँ नहीं होतीं, केवल सामने का एक ही द्वार होता है। यदि खरीदार भी दूकान में

घुस जावें तो बेचने वाले और खरीदने वाले दोनों के लिये मुश्किल से अन्दर जगह होगी।

यहां की स्त्रियां अपने ऊपर बुर्का पहने रहती हैं। जो स्त्रियां परदा नहीं करतीं वे सुन्दर चमकीले रंगों के सुन्दर वस्त्र पहनती हैं। मर्द लोग भी सुन्दर चमकदार कपड़े पहनते हैं। बूढ़े अपने सिरों पर साफा बाँधते हैं किन्तु युवक लोग तुर्की टोपी लगाते हैं। यहाँ पर योरुपीय वस्त्र नहीं पहना जाता और अगर पहना भी जाता है। तो यहाँ वह अच्छा नहीं लगता।

बाज़ार आदि में गाड़ियों आदि के आने जाने से किसी प्रकार का शोर नही होता। यहाँ की गलियाँ तंग हैं इसलिये यहाँ पर किसी प्रकार की सवारी नहीं आ सकती। यहाँ केवल बेचने और खरीदने वालों की आवाज़ें सुनाई देती हैं। यहाँ बाजार में इस नगर में सबसे अधिक प्रसिद्ध मसजिद है। इस मसजिद का नाम बेगोवा-दजामीजा है। जब यूसरेफ पाशा ने सोलहवीं शताब्दी में बोसनिया को जीता था तो उसने यह मसजिद बनवाई थी। ईसाई लोग नमाज़ के समय इन मसजिदों में नहीं जा सकते। स्त्रियों के लिये मसजिदों

में जाना बिलकुल मना है। यहाँ के लोगों का कहना है कि स्त्रियों के आत्मा नहीं होती।

इन मस्जिदों में जब मुसलमान लोग नमाज़ पढ़ने जाते हैं तो बीच में उन्हें रुक कर पहले वज़ू (पानी से हाथ, मुँह, पैर आदि धोना) करना पड़ता है। बेगावादजामीजा मसजिद के बीच में एक बड़ा फ़व्वारा है जिसमें बहुत से छिद्रों से हर समय तेज़ी के साथ पानी निकलता रहता है। यहाँ मुसलमान नमाज़ी जाकर वज़ू करते हैं और फिर अपनी नमाज़ पढ़ने के स्थान पर जाते हैं।

नमाज़ी लोगों को उठने, खड़ा होने, बैठने और सिजदा करने में एक पूरी कसरत हो जाती है। उनके शरीर को बड़ा लचीला होने की आवश्यकता है, क्योंकि उन्हें शरीर को इधर-उधर, नीचे ऊपर उठाना पड़ता है।

तुर्की पुजारियों को होदजा कहते हैं। यह पुजारी दिन में कई बार सब से ऊँची मीनार पर जाकर अज़ान देता है और नमाज़ियों को बुलाता है। थोड़ी देर में चारों ओर से अज़ान के शब्द आने लगते हैं।

रमज़ान का महीना मुसलमानों के रोज़ा (व्रत)

का महीना होता है। इस महीने में दिन भर मुसलमान लोग कुछ नहीं खाते पीते, दिन डूबने के पश्चात् अपना रोज़ा खोलते (व्रत भंग करते) हैं। यह लोग रात को खाना खाते हैं। दिन के समय यहाँ के दूकानदार और दूसरे बहुत से लोग दूकानों पर सुस्त पड़े रहते हैं। संध्या समय चहल-पहल मच जाती है और रात आनन्द पूर्वक व्यतीत होती है। सवेरा होते ही शान्ति स्थापित हो जाती है।

इस नगर के जिस भाग में मुसलमान रहते हैं उस भाग के मकानों की खिड़कियों और दरवाज़ों पर लकड़ी या लोहे की जाली लगी रहती है और परदे पड़े रहते हैं ताकि कोई व्यक्ति स्त्रियों को न देख सके। यहाँ की बेचारी स्त्रियाँ एक प्रकार के कैदखाने में रहती हैं। वे जब बाहर निकलती हैं, तो काला बुर्का पहन कर निकलती हैं।

इस नगर का आधुनिक भाग, प्राचीन एशियाई भाग के बिलकुल विपरीत है। आधुनिक भाग के मकान बड़े, हवादार और सुन्दर हैं। इसी भाग में एक कैथीड्रल बना हुआ है। यह बहुत बड़ा और सभी

मन्दिरों मकानों और मस्जिदों से ऊँचा है। मिलजाशका नदी के किनारे पर एक बड़ा सुन्दर अजायबघर है। इसको आस्ट्रिया वालों ने बनवाया था। इससे यहाँ कारीगरी की वस्तुएँ और ऐतिहासिक वस्तुएँ हैं। यहां का टाउन हाल बैज़ण्टाइन कारीगरी का बना है।

साराजेवो से कुछ मील की दूरी पर पहाड़ी चट्टानों के बीच से बोसना नदी निकलती है। यह स्थान बड़ा ही सुन्दर है। इस स्थान का नाम इल्जिडजे है। रोमन लोगों ने इसी स्थान पर गंधक के एक सोते का पता लगाया था। यहाँ पर रोगी लोग स्नान करने आते थे अब भी बहुत से कट्टर धर्म वाले यहाँ स्नान करने आते हैं। यहाँ पर ट्राउट मछलियाँ पाली जाती हैं।

मोस्टार नगर

साराजेवो से मोस्टार की यात्रा बड़ी ही सुहावनी है। जगह जगह पर दृश्य बदलता जाता है और पहाड़ी प्रदेश की छटा ऐसी सुन्दर है कि देखते देखते यात्रा समाप्त हो जाती है और किञ्चितमात्र पता नहीं चलता है। यह भाग बिकट पहाड़ी है, यहां पर जब रेल जाती है। तो उसमें एक इंजिन के सिवा दूसरे की आवश्यकता पड़ती है। एक इंजिन आगे से खींचता है और दूसरा पीछे से ढकेलता है तब गाड़ी चलती है नहीं तो चलना कठिन हो जाता है। यहां पर छोटे छोटे कोच (गाड़ियां) चलते हैं। इस भाग का मार्ग ख़तरनाक है।

इस मार्ग में नेरेतवा नदी पड़ती है और कुछ दूर तक रेल उसके किनारे किनारे जाती है। इसके पश्चात् रेल दो पहाड़ों के बीच वाले मार्ग में ह.कर जाती है, फिर बड़े बड़े खड्ड, नाले और घाटियां पड़ती हैं। इन दुर्गम स्थानों को साफ करने के पश्चात् गाड़ी साफ खुले मैदान में प्रवेश करती है और एक बड़े भारी सांप की भाँति पहाड़ी मार्ग पर लहराती मरोड़ खाती। आगे

बढ़ती है। इस प्रकार कभी खुले मैदानों में कभी दर्रों के बीच और घाटियों में और कभी पहाड़ों पर होकर यह रेलवे मार्ग जाता है। यहाँ पर बोसनिया के हरे भरे मैदानों का अन्त हो जाता है और उसके स्थान पर हर्ज़ीगोवीनियन आल्पस आरम्भ हो जाते हैं।

इस मार्ग में बहुत कम लोग रहते हैं। गाँव जो थोड़े बहुत हैं भी वह बहुत दूर दूर पर बसे हुये हैं। इस मार्ग में स्टेशन बहुत कम हैं और गाड़ी उन स्टेशनों पर कोयला पानी के लिये ही रुकती है। यात्री यहाँ के स्टेशनों पर बहुत कम रहते हैं।

जब गाड़ी स्टेशन पर रुकती है तो यहाँ के गरीब निवासियों के लड़के लड़कियाँ डिब्बों को घेर लेते हैं। और फल फूल बेचते हैं। यहाँ के निवासी बड़े गरीब हैं, इसलिये ये बालक अपने फल फूल बेचने से उतने प्रसन्न नहीं होते जितने रोटी के टुकड़ों के पाने से प्रसन्न होते हैं यहाँ के लोगों को भर पेट भोजन कभी नहीं मिलता।

ऊँची लम्बाकार पहाड़ी शिलाओं और चट्टानों के बीच हर्ज़ीगोविना की राजधानी मोस्टार बसा है।

नगर के चारों ओर पहाड़ हैं और पहाड़ों के ऊपर अर्द्ध वृत्ताकार किले बने हुये हैं। इस नगर को अपने अस्तित्व के लिये सदैव प्रकृति और बैरियों के विरुद्ध लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी हैं।

यहाँ के निवासी उत्पातों तथा घटनाओं के कारण वीर सैनिक होते हैं यह लोग बड़े सुडौल होते हैं। इनका कद लम्बा और रंग काला होता है। स्त्रियाँ भी सुडौल शरीर तथा सुन्दर प्रकृति वाली होती हैं। स्त्रियों के अन्दर भी सैनिक भाव पाये जाते हैं। यहाँ की प्राकृतिक स्थिति को देखते हुये यहाँ की स्त्रियों को मामूली स्त्रियों से अधिक बहादुर और मज़बूत होने की आवश्यकता भी है; क्यों कि इनको जीवन भर अपनी जीविका तथा जीवन के लिये लड़ाइयाँ लड़नी पड़ती है।

मोस्टार नगर के घर पत्थर के बने हैं, उनकी छतें स्लेट पत्थरों की हैं, केवल आधुनिक मकान की छतें लाल खपड़ों की हैं। घर छोटे और कम ऊँचे हैं। मकानों की खिड़कियाँ बहुत छोटी हैं और उनमें होकर सूर्य का प्रकाश मुश्किल से आ सकता है। इसका कारण दुश्मनों का भय है। जितनी छोटी खिड़कियाँ होंगी



उतना ही अच्छा है। अपनी रक्षा के लिये उपाय करना भी इन लोगों की प्रकृति में पाया जाता है, और इसीलिये यह लोग अपने मकान एक मज़बूत किले की भाँति बनाते हैं।

इस नगर की मस्जिदों के गुम्बज प्राचीन कला कौशल का परिचय देते हैं। नेरेतवा नदी मोस्टार नगर के बीच होकर बहती है। नदी के किनारे पर गढ़ तथा किले बने हैं। इस नदी में एक प्राचीन पुल है जो नगर के दोनों भागों को मिलाता है। इस पुल के महराब की भी बनावट गोथिक कला की है। यह पुल रोमन काल का है और बड़ा प्रसिद्ध है। पुल के दोनों सिरों के फाटक तथा गुम्बद भी रोमन ढंग के बने हैं। स्लावोवेनी भाषा में पुल को मोस्ट कहते हैं और मोस्ट शब्द से ही इस नगर का नाम मोस्टार पड़ा है।

यहां के निवासियों (हर्ज़ीगोवीनियन) का पहनाव बड़ा सुन्दर रंगीला और मूल्यवान होता है। इन लोगों की पेटी अथवा कमर बन्द में छूरी और पिस्तौल लटकती रहती है। बाज़ार के दिनों में यहां के निवासी तरह तरह की पोशाकें पहन कर बाज़ार आते हैं तो वहां इनकी

पोशाकों का अच्छा प्रदर्शन होता है। इन लोगों की वाणी बड़ी गम्भीर होती है।

इस नगर की स्त्रियों के बीच पर्दे का रिवाज आस पास के दूसरे नगरों से अधिक पाया जाता है। अधिक पर्दा करने वाली स्त्रियां बुर्के और चादर के सिवा नीले रंग का मोटा लम्बा चोगा पहनती हैं जिनकी लम्बी बाहें बाहर की ओर लटकती रहती हैं और सिर पर टोपी की शकल बनी रहती है। इस प्रकार उनका चेहरा छिपा रहता है और उन्हें कोई देख नहीं सकता। यहाँ की स्त्रियाँ इसे साल भर बराबर पहनती हैं और उन्हें किञ्चित मात्र भी कष्ट नहीं होता। गर्मी के दिनों में भी उन्हें कष्ट नहीं होता। यह एक बड़े भेद की बात है।

मोस्टार नगर में साल के कई महीनों तक बड़ी गरमी पड़ती है सूर्य के किरणों की तेजी से मनुष्य का रोमाँच हो उठता है। नगर सूर्य की गरमी के कारण भट्टी की तरह गरम हो जाता है। दिन को सूर्य की गरमी और धूप से बचने के लिये छाया नहीं होती है और पत्थर के मकान इतने चमकने लगते हैं कि आँखें चका

चौंध हो जाती हैं। इस नगर में कोई भी आदमी अपनी गरमी की छुट्टियाँ बिताना पसंद नहीं करता।

सेंट सावा के ड्यूक के समय में मोस्टार नगर एक प्रसिद्ध स्थान था। यहाँ के ड्यूक बोसनिया के राजा के अाधीन रहते थे। जब तुर्कों का राज्य हुआ तो हर्ज़ीगोविना को स्वराज्य मिल गया और मोस्टार नगर उसकी राजधानी बनाई गई। इस स्वराज्य से यहां के निवासियों को कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि तुर्क बादशाह के आधीन होने के कारण इन पर भांति भाँति के अत्याचार होते थे। ईसाइयों पर खास कर अत्याचार किया जाता था और थोड़ी थोड़ी बातों में भी उन्हें आग में जला देने या क़त्ल कर देने की सजा दी जाती थी। उनके सिर काट कर बादशाह के महल के चारों ओर लटका दिये जाते थे। जिससे देखने वाले दूसरे लोग भयभीत हों।

भूमि खराब होते हुये भी मोस्टार नगर के आस पास तम्बाकू और अंगूर की अच्छी उपज होती है। यहाँ के अंगूर बड़े अच्छे होते हैं और मोस्टार नगर अपनी अंगूरी शराब के लिये प्रसिद्ध है।

देश दर्शन

डलमेशिया और उसका प्राचीन इतिहास

हरजेगोविना के उजाड़-बंजर पहाड़ी प्रदेश को पार करने के पश्चात् हम डलमेशिया के सुन्दर समुद्री तटीय प्रदेश में पहुँचते हैं। यह भाग बड़ा ही रमणीक है और इसकी प्रशंसा करना बहुत कठिन है। यहां के तटीय समुद्री दृश्य को देख कर मनुष्य का हृदय प्रफुल्लित हो उठता है। इस तटीय प्रदेश को स्वयं प्रकृति ने ही सुन्दर ढंग से सजा रक्खा है उसके साथ साथ इस भाग को मानव जाति ने भी अपनी शिल्प कला तथा कारीगरी से सजाया है।

इस भाग के कार्स्ट का पहाड़ी प्रदेश ही मुख्य है। यह एक पठार है और चूने के पत्थर से बना है। इस भाग से पानी छन कर नीचे नदियों के रूप में बहता है। पठार के नीचे नदियाँ चट्टानों से निकलती हैं। इस पठार में कहीं कहीं पर सुन्दर हरे-भरे मैदान हैं। कहीं कहीं पर इन मैदानों में आलू आदि पौदों की उपज होती है। इस पहाड़ी उजाड़ प्रदेश में जहां कहीं नीची (गड्ढे) ज़मीन होती है, वहां पर मिट्टी पानी द्वारा बहकर



आ जाती है और वहीं पर खेती होती है। इस भाग में एक एक इंच भूमि बड़ी मूल्यवान है।

यदि हम डलमेशिया के प्राचीन इतिहास का अध्ययन करें तो हमें मालूम होगा कि यहां पर स्लाव, इटैलियन, हंगेरियन, तुर्क और आस्ट्रियन आदि जातियों का अधिकार बारी बारी से रहा। आजकल यह यूगोस्लेविया का एक भाग है।

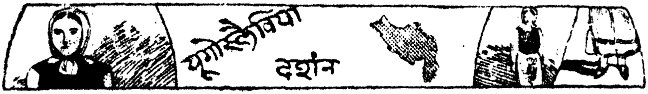
प्राचीन काल में यहां पर इलीरियन जाति बसी थी। यूनानी और रोमन लोगों ने इनको अपने अधिकार में किया और १६८ वर्ष ईसा के पूर्व इलीरिया का प्रान्त रोमन राज्य में मिलाया गया। इस घटना के पश्चात् इस प्रान्त की काफी उन्नति हुई। कुछ समय के बाद स्लाव जाति बल्काम प्रान्त में डेन्यूब नदी के किनारे किनारे स्लाव जाति आकर बस गई। सातवीं शताब्दी के लगभग असभ्य जातियों ने इन जातियों पर आक्रमण किया, किन्तु स्लाव जाति ने उन्हें मार भगाया और उसके बाद से इस प्रान्त के मुख्य निवासी स्लाव जाति ही रही है।

इस तटीय प्रदेश को लेने के लिये बड़ी बड़ी लड़ाइयां

हुई हैं। नवीं सदी में क्रोशियन जाति बड़ी शक्तिशाली हो गई और उसने इस प्रदेश के मुख्य भागों को अपने अधिकार में कर लिया। सन् ११०२ ई० में कोलोमैन बादशाह ने डलमेशिया और क्रोशिया को मिलाकर राज्य किया। उसके पश्चात् इस प्रान्त को अधिकार में करने के लिये वेनोशियन और हंगेरियन लोगों में बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ हुईं। १५३७ ई० में तुर्कों का आक्रमण हुआ। उसके बाद बैज़ण्टाइन जाति के अधिकार में यह प्रान्त लगभग सौ साल तक रहा। सत्रहवीं शताब्दी में वेनीशियन जाति फिर शक्तिशाली हो गई और उसने अपना अधिकार जमाया। १७९६ ई० के पश्चात् एक संधि द्वारा यह प्रान्त इटली ने आस्ट्रिया को दे दिया। उन्नीसवीं शताब्दी में नेपोलियन की सेना ने इस प्रान्त पर फ्रान्सीसियों का अधिकार जमाया।

१८१५ ई० में यह भाग आस्ट्रिया राज्य में मिला दिया गया और १९१४ ई० की बड़ी लड़ाई तक यह आस्ट्रिया के अधिकार में रहा।

१९१४ की बड़ी लड़ाई के बाद यह प्रांत यूगोस्लैविया देश में मिला दिया गया।



रगूसा का प्राचीन प्रजातन्त्र राज्य

रगूसा रोमन नाम है। एपीडाउरस यूनानी नगर के नष्ट होने के पश्चात् रगूसा नगर की उत्पत्ति हुई। छठीं शताब्दी में स्लाव जाति ने एपीडाउरस (प्राचीन रगूसा) नगर पर आक्रमण किया। इस नगर का नाम स्लाव भाषा में "त्ज़ाफ़्तात" है। रोमन जाति ने स्लाव जाति के आने पर एपीडाउरस नगर को छोड़ पहाड़ के ऊपर जाकर रगूसा नगर बसाया, जिस चट्टान पर रगूसा नगर बसा है वह समुद्र में घुसी हुई है।

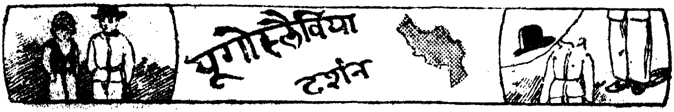
एपीडाउरस नगर में ईसकुलापियस रहा करता था, उसकी स्मृति में वहां पर लोग साँप की भांति लेट कर पूजा किया करते थे। वहाँ के निवासी साँप को चतुरता का भण्डार मानते थे, अब भी औषधियों में साँप के चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। भूचाल के कारण एपीडाउरस नगर लापता हो गया। कुछ लोगों का कहना है कि अब भी उस नगर के घर दीवाल आदि समुद्र के भीतर उसी भांति खड़े हैं।

रगूसा नगर के पीछे की ओर जंगल था, उसी

बन में स्लाव जाति आकर रहने लगी। बाद को स्लाव और रोमन दोनों जातियाँ मिल गईं और जहां पर स्लाव जाति बसी थी उसका नाम डुब्रोवनिक नगर रक्खा। जंगल को स्लाव भाषा में डबराका कहते हैं।

डुब्रोवनिक नगर में हर प्रकार के भागे हुये व्यक्तियों को शरण मिलती थी। जिन लोगों के जहाज़ समुद्र में डूब जाते थे उनको भी यहाँ शरण मिलती थी। दोस्त, दुश्मन सभी प्रकार के लोग इस नगर में आते थे और खुशी के साथ वहाँ वास करते थे। कभी भी इस नगर ने किसी व्यक्ति को स्थान देने से इन्कार नहीं किया इसी कारण इस नगर का नाम "दी सिटी आफ रिफ्यूज" (शरण देने वाला नगर) पड़ा था।

एक बार कैयूर डी लायन इंगलैंड का बादशाह होलीलैंडस से एड्रियाटिक समुद्र होकर आ रहा था। तो एक बारगी तूफान आ गया। ठीक इसी समय वह डलमेशिया के किनारे आ चुका था। तूफान के वेग को देख कर राजा डर गया कि कहीं उसका जहाज़ टूट कर डूब न जावे। इसलिये उसने दृढ़ प्रतिज्ञा की कि जहाँ वह पहले पहल पैर रक्खेगा वहाँ एक चर्च बन-



जायेगा। आखिर वह डुब्रोवनिक के दूसरी ओर लोकरम द्वीप में जा लगा। यह देखते ही डुब्रोवनिक प्रजातन्त्र राज्य के लोगों ने उसकी सहायता की और डुब्रोवनिक नगर में एक बड़ा सुन्दर गिरजा बनाया गया। लोकरम द्वीप में भी एक छोटा सा गिरजाघर बनाया गया। डुब्रोवनिक का गिरजा कुछ समय बाद भूचाल में बिलकुल बर्बाद हो गया।

डुब्रोवनिक प्रजातन्त्र राज्य का प्रबन्ध एक सेनेट द्वारा होता था। अपनी स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिये ही इस नगर ने अपने मालिकों को समय समय पर बदल दिया।

डुब्रोवनिक नगर के अपने स्वयं अलग कानून थे। इसका अपना अलग झंडा (पताका) था और इसके अपने सिक्के भी अलग बनाये जाते थे। यहाँ के सिक्कों पर सेंट ब्लासियस का चित्र रहता था। किसी समय में वेनीशियन लोग डुब्रोवनिक नगर पर धावा मारने का प्रयत्न कर रहे थे। ठीक उसी समय एक आरमीनियन पादरी को सेंट ब्लासियस ने स्वप्न दिखाया कि वेनिस के निवासी उसके नगर पर आक्रमण करने का प्रयत्न

कर रहे हैं। इस स्वप्न के कारण डुब्रोवनिक के अधिकारी होशियार हो गये और जब वेनिस का आक्रमण उन पर हुआ तो उन्होंने अपने नगर की रक्षा सरलता पूर्वक कर लिया। तभी से सेंट ब्लासियस एक पवित्र सेन्ट माने जाते थे।

रगूसा नगर के निवासी बड़े मल्लाह तथा व्यापारी थे। यह लोग दूर दूर के देशों के साथ व्यापार करते थे। क्रामवेल ने इंगलैंड के बन्दरगाहों पर इन्हें काफी सुविधा दी थी। पन्द्रहवीं शताब्दी में रगूसा योरुप का एक बड़ा प्रसिद्ध नगर तथा व्यापारिक केन्द्र था।

पन्द्रहवीं शताब्दी में इस नगर ने केवल व्यापारिक उन्नति ही नहीं की वरन् सामाजिक कला-कौशल और सभ्यता में भी बड़ी उन्नति की। पन्द्रहवीं सदी इस छोटे प्रजातन्त्र राज्य का स्वर्ण काल कहलाता है। इस काल में विद्या कला कौशल और व्यापार की अच्छी उन्नति हुई। सर्वियन नाटक अपनी भाषा में लिखे गये। बड़ी बड़ी पुस्तकें, नाटक, कहानियाँ आदि सर्ब भाषा में लिखी गई और इटैलियन भाषा का प्रयोग कम हो गया।

सत्रहवीं शताब्दी में भूकम्प आया और उसमें डुब्रो-

वनिक नगर बिल्कुल बरबाद हो गया। जितने ऐतिहासिक स्थान तथा स्मारक थे सभी ढा गये और उनका नाम सदैव के लिये मिट गया।

यद्यपि यह नगर फिर से बसाया गया किन्तु वह प्रभुत्व न आ सका। १८१६ में नेपोलियन का आक्रमण हुआ और उसने सदैव के लिये इस नगर के प्रजातन्त्र राज्य को मिटा दिया। अब इस नगर के केवल खँडहर समुद्र के किनारे बाकी रह गये हैं और वहां पर फूलों के पौधे तथा ताड़ आदि के पेड़ उगते हैं।



यूगोस्लैविया में फल के बाज़ार का एक दृश्य

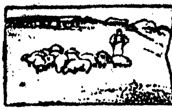
डलमेशिया के तटीय नगर

सिवेनिक को इटैलियन भाषा में सिबेनिको कहते हैं। यह एड्रियाटिक के तट पर एक सुन्दर बन्दरगाह है। इस बन्दरगाह में प्राचीन रोमन हार्बर की सभी अच्छाइयाँ विद्यमान हैं। इस नगर के मुख्य निवासी स्लाव हैं।

इस नगर को देखने से मालूम होता है कि इस पर आस्ट्रियन राज्य का किञ्चित मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। चर्च, मकान, गुम्बद, महराब आदि वस्तुओं की कला वही पुराने ढंग की है।

यहां के प्राचीन चित्रों, मठों और गिरजाघरों को देख कर मालूम होता है कि यह बड़ा ही धनी तथा सभ्य देश था। शिल्प-कला में मोटाई, ऊँचाई, चौड़ाई आदि की समानता ऐसी है कि ज़रा भी अन्तर नहीं मालूम होता। यहां की प्राचीन कारीगरी को देख कर हम यही कह सकते हैं कि यहां के प्राचीन निवासी इस कला में प्रवीण थे।

इस नगर से थोड़ी दूर पर क्रका का प्रपात है जो







न्याग्रा प्रपात से छोटा है। यह प्रपात पहाड़ के ऊपर से निकलता है और बड़ी ऊँची चट्टानों पर वेग के साथ बहता हुआ समुद्र में जा गिरता है।

सिवेनिक से कुछ ही मील दूर ट्रोगीर नगर है। इस नगर की बनावट वेनीशियन है। यहाँ के बहुत से मकान, गिरजाघर तथा मठ उसी काल के बने हैं जब वेनिस उन्नति के शिखर पर था। इस नगर के खंडहर वर्तमान नगर स्पिलिट से कहीं अधिक सुन्दर तथा रमणीक प्रतीत होते हैं। मन्दिरों, गिरजाघरों, गुम्बदों और मेहराबों की कारीगरी देखते ही बनती है। यहां पर डिवोक्लेशियन पैगन राजा का महल है। जो ३०५ ई० में गद्दी पर बैठा था।

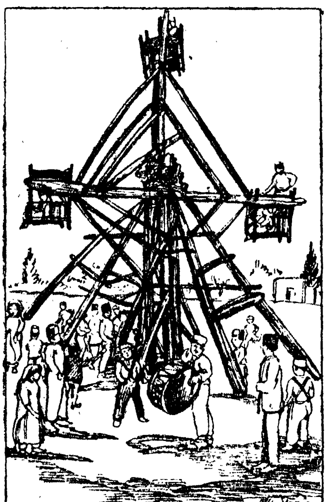
डिवोक्लेशियन राजा के पहले डलमेशिया का मुख्य नगर सोलिन अथवा सलोना था। अब इस नगर के केवल खंडहर हैं। डिवोक्लेशियन राजा के महल में पानी पहुंचाने के लिये जो नाली सोलिन से स्पिलिट नगर को बनाई गई थी वह अब तक क़रीब क़रीब वैसी ही बनी है।

वर्तमान खुदाई होने पर बहुत सी नई बातें यहां के बारे में ज्ञात हुई हैं। इन नगरों में आदि-ईसाइयों पर बड़े बड़े अत्याचार पैगन (आस्तिक) राजाओं ने किये थे। वे भूके शेरों के सामने गोले के अन्दर डाल दिये जाते थे और उन्हें शेर चट कर जाते थे।

डलमेशिया के तटीय प्रदेश पर बहुत से प्रायद्वीप स्थित हैं उनमें कोकूला सब से अधिक सुन्दर है। इस नगर की पतली सड़कें धीरे धीरे ऊपर की ओर चढ़ती हैं और पहाड़ी के ऊपर बने हुये मठ तक जाती हैं। सड़कों के दोनों ओर सुन्दर महल बने हुये हैं जिनकी कारीगरी बहुत ही अच्छी है।

बोकाकोटास्की मान्टिनेग्रिन पर्वत के नीचे एक खाड़ी में स्थित है। यह योरुप के प्राकृतिक बन्दरगाहों में से एक है। यह बन्दरगाह बड़ा ही सुन्दर और रमणीक है। इस खाड़ी में यदि नौका पर बैठ कर भ्रमण करें तो हमें पहाड़ी के ऊपर तिरछी घूमती हुई एक स्वेत लकीर सी दिखाई देगी। यही बोकाकोटास्की से सेटेगनी जाने वाली सेटेन्जी नामक सड़क है। यदि हम इस सड़क पर मोटर द्वारा भ्रमण करें तो हमें बड़ा ही भय प्रतीत होगा।

यह सड़क घूमती फिरती ऊपर को जाती है और प्रत्येक घुमाव पर यदि हम नीचे की ओर दृष्टि डालें तो सैकड़ों फीट नीचे खाली स्थान दिखाई पड़ता है। किन्तु यदि हम नीचे न देखें और इधर उधर तथा ऊपर की ओर दृष्टि डालते जावें तो दृश्य बड़ा ही सुन्दर और रमणीक होगा।



यूगोस्लैविया के हिंडोला



यूगोस्लैविया के प्रेमी और प्रेमिका

देश दर्शन

मान्टीनीग्रो

(वीरों के रहने का बीहड़ स्थान)

जिस प्रकार एक चील किसी ऊँचे पहाड़ी टीले पर बैठती है उसी प्रकार मान्टीनीग्रो भी ऊँचे पहाड़ी बंजर टीले पर स्थित है। यहां के निवासियों के बीच एक प्राचीन कहानी इस नगर के बारे में प्रसिद्ध है कि जब ईश्वर ने भूरचना आरम्भ की तो उसने अपना पत्थर का भरा झोला इस नगर के ऊपर छोड़ दिया जो चारों ओर फैल गया। यह एक लड़कों की कहानी है और सत्यता का भाव इस कहानी में नहीं है तो भी यहां के बीर लड़कों की भांति ऐसी कहानियों पर विश्वास करते हैं।

सर्व भाषा में मान्टीनीग्रो का अर्थ काला पहाड़ होता है। यहां के निवासी प्राकृतिक रूप से बड़े बहादुर होते हैं। यद्यपि यह एक छोटा सा प्रदेश है तो भी इस प्रदेश का इतिहास बड़ा महत्वपूर्ण है।

यूगोस्लैविया देश में मान्टीनीग्रो सबसे छोटा और पहाड़ी प्रदेश है। यह अलबेनिया के उत्तर की ओर

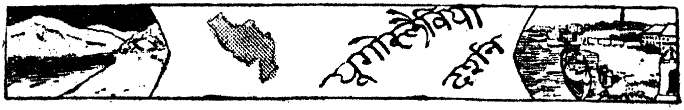
स्थित है। इस देश का भ्रमण केवल तीन दिन में किया जा सकता है। यह नगर एक ऐसे पहाड़ी शिखर पर स्थित है कि यदि एक भी बन्दूक का शब्द सुनाई पड़ जाता था तो सारा का सारा नगर शीघ्र ही युद्ध के लिये तयार हो जाता और फिर बड़ी से बड़ी सेना के लिये इसको जीतना कठिन हो जाता था।

मान्टीनीग्रो जाति के लोग बड़े वीर लड़ाका होते हैं। यह लोग बड़े पक्के निशाने बाज़ होते हैं। यह लोग कठिन से कठिन परिश्रम कर सकते हैं और सख्त से सख्त कठिनाइयों को भी खुशी से सहन कर सकते हैं। युद्ध के समय इनमें अलौकिक सहनशीलता आ जाती है। इन्हें उस समय नींद की बहुत कम आवश्यकता रह जाती है। खाने की भी इनको बहुत कम ज़रूरत पड़ती है। यह लोग ऐसे समय में केवल थोड़े से रोटी के टुकड़ों, मक्खन, प्याज तथा लहसुन पर ही अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। इन लोगों को अपनी वीरता और दृढ़ता पर बड़ा विश्वास होता है। इसी कारण इनकी सहनशीलता प्रबल हो उठती है और सफलता इनके पैरों को आ चूमती है।

मान्टीनीग्रो जाति की बहादुरी इतिहास में प्रसिद्ध है।

इन लोगों की बहादुरी की प्रशंसा में बड़ी बड़ी कवितायें लिखी गई हैं। वर्ड्सवर्थ अँग्रेज़ी के एक बड़े कवि ने भी इनकी बहादुरी पर एक बड़ी कविता लिखी है। इन्होंने ५०० साल तक बहादुरी के साथ तुर्कों का सामना किया और दुश्मनों से अपने देश की रक्षा की। यह लोग सदैव अपने भाई स्लाव लोगों को शरण देते रहे।

मान्टीनीग्रो जाति के लोगों को सदैव लड़ाई के लिये तयार रहना पड़ता था। कभी भी इनको लड़ाई के हथियार उतार कर सोने की छुट्टी नहीं मिलती थी। इसलिये लड़ाई के सिवा सारा काम स्त्रियों को ही देखना पड़ता था। जुताई, बोवाई, गल्लेबानी, कपड़ा और खाने आदि के सभी प्रबन्ध स्त्रियों को ही करने पड़ते थे। उसी के कारण आज भी इस जाति के अन्दर वही भाव मौजूद हैं। स्त्रियों को कठिन से कठिन परिश्रम करना पड़ता है और मर्द सुस्त पड़े रहते हैं। स्त्रियां बड़े बड़े बोझ लेकर चलती हैं। मर्द उनके साथ साथ खाली हाथों चलते हैं। स्त्रियों को बड़े सवेरे से अधिक रात्रि तक काम करना पड़ता है। इस बात को



यहां के निवासी बेजा नहीं मानते। सचमुच जो पुरुष कुछ काम नहीं करता और सारा काम स्त्रियों के जिम्मे छोड़ता है वही सच्चा मान्टीनीग्रो निवासा कहलाता है।

इस जाति के बीच घर का सबसे बड़ा पुरुष अगुआ माना जाता है। सभी प्राणी उसके कथनानुसार काम करते हैं। जो कुछ वह कहता है वही कानून माना जाता हैं क्योंकि करीब करीब सब को एक साथ ही काम करना पड़ता था।

बोका कोटार्सका से मान्टीनीग्रो जाने के लिये सड़क है। पक (दक्षिणी सर्विया) से एक अच्छी सड़क सेटिंगनी को जाती है। इस मार्ग में पहाड़ी ऊँचे-नीचे प्रदेश, उपजाऊ हरे भरे मैदान, घाटियां आदि पड़ती हैं। काले पर्वतीय प्रदेश में कहीं कहीं पर खेती करने योग्य भूमि है जहाँ पर अनाज और मक्का की खेती होती है। कहीं कहीं पर तो खेती के योग्य भूमि का छोटा टुकड़ा केवल एक दरी के बराबर ही होता है। ऐसे स्थानों पर मनुष्य को अपनी जीविका के लिये प्रकृति के विरुद्ध लड़ना पड़ता है।

देश दर्शन

मान्टीनीग्रो का इतिहास

कोस्साओ के युद्ध के बाद जब सर्ब राज्य का अंत हुआ तो बहुत से सर्ब लोग काले पर्वत की ओर भाग गए और वहीं जाकर बस गये। यहाँ पर मान्टीनीग्रो लोग अपने प्राचीन ढँग पर अपना जीवन व्यतीत करते थे, उनमें बहुत से लोग डाकुओं की भांति जीवन व्यतीत करते थे।

इवो ज़रनोविच एक प्रसिद्ध मान्टीनीग्रो सूरमा था। उसने बड़े बड़े बहादुरी के काम किये हैं। उसने तुर्कों का कई बार बहादुरी के साथ सामना किया और कभी पीठ नहीं दिखाई। उस बहादुर सूरमा के कार्यों का वर्णन बहुधा कविताओं में किया गया है।

जब इवो के सन्तान का अंत हो गया तो मान्टी-नीग्रो पर बिशप लोग राज्य करने लगे। अठारहवीं शताब्दी में पेट्रोविच नीगोश वंश के स्लाव लोग राज्य करने के लिये चुने गये। डैनीलो इसी वंश का राजा था, उसने अपने मान्टीनीग्रो सैनिकों से कहा कि वह सभी मुसलमानों को एक रात में अपने देश से निकाल

दें और यदि कोई जाने से इन्कार करे तो उसे बप्तिस्मा देकर ईसाई बना लें। इस कार्य को परिणत करने में बहुत से लोगों को तलवार के घाट उतारना पड़ा था। इस पेट्राविच नीगोश घराने का राज्य बहुत समय तक रहा।

यद्यपि अठारहवीं सदी में डलमेशिया के तटीय प्रदेश पर तुर्कों का राज्य स्थापित हो गया तो भी मान्टीनीग्रो जाति के लोग पहाड़ी स्थानों पर स्वतंत्र रहते थे और समय समय पर तुर्कों पर आक्रमण करते रहते थे। धीरे धीरे उन्होंने तुर्कों की शक्ति ऐसी क्षीण कर दी कि उन्हें मजबूर होकर मान्टीनीग्रो छोड़कर भाग जाना पड़ा। फिर भी तुर्कों मे सरहदी स्थानों पर युद्ध होता रहा। उसके बाद फ्रान्सीसियों का आक्रमण हुआ, फिर आस्ट्रिया के लोग आए। उन्नीसवीं शताब्दी में मान्टीनिग्रो और आस्ट्रिया के बीच संधि हो गई।

पीटर द्वितीय ने १८३० से १८५१ तक राज्य किया। यह पेट्रोविच नीगोश वंश का राजा था। इसके समय में लड़कों को शिक्षा देने तथा सभ्य बनाने के लिये स्कूल खोले गये। पीटर द्वितीय एक बड़ा सर्ब भाषा का कवि था। उसने 'माउनटेन क्राऊन' (पहाड़ी ताज) नामक किताब लिखी है।

प्रिन्स निकोलस अन्तिम मान्टीनीग्रो-राजा हुआ। इसने अच्छा राज्य किया, किन्तु राष्ट्रीय सभा ने इसे गद्दी से उतार बाहर किया। निकोलस सदैव सर्व साम्राज्य का स्वप्न देखता था, उसका यह स्वप्न १६१८ में बड़ी लड़ाई के पश्चात् पूरा हुआ।

मान्टीनीग्रो लोग अपना प्राचीन राष्ट्रीय चमकीले भेष धारण करते हैं। यह लोग अपने सिर पर पीछे की ओर एक लाल-काली टोपी पहनते हैं। इस टोपी का लाल रंग उस खून का सूचक है जो उन्होंने अपने देश की रक्षा के लिये बहाया है और काला रंग कोस्साओ के युद्ध का हार के दुख रूप का सूचक है।

सेटिगनी नगर एक गाँव की तरह है। इस नगर की मुख्य लम्बी सड़क के दोनों ओर एक तल्ले मकान हैं। इन घरों में जीवन व्यतीत करने के सिवा और आराम के सामान नहीं हैं। सेटिगनी नगर में ही यूगोस्लेविया का बादशाह एलेग्ज़ेन्डर पैदा हुआ था। उसकी माँ ज़ोरका, प्रिन्स निकोलस की पुत्री थी।

स्थिति

यूगोस्लैविया या जूगोस्लैविया दक्षिणी स्लैव लोगों का देश है। दक्षिण के स्लैव लोग उत्तर में चेकोस्लोवेकिया के स्लैव लोगों से मिलते जुलते हैं। यूगोस्लैविया सर्ब, क्रोट और स्लोवीन लोगों का राज्य है। १९१४ की बड़ी लड़ाई के पहले केवल सर्विया एक स्वतंत्र राज्य था। क्रोट और स्लोवीन लोग आस्ट्रिया, हंगारी राज्य की प्रजा थे। इस प्रकार यूगोस्लैविया में पुराने सर्बिया देश में दक्षिण की ओर मान्टीनीग्रो, दक्षिण-पूर्व की ओर बल्गेरिया के कुछ ज़िले शामिल हो गये। लेकिन इस नये राज्य के बीच का बहुत बड़ा भाग बोसनिया, हर्ज़ीगोविना के मिलने से बना है। उत्तर की ओर।क्रोटिया, स्लैवोनिया और बानात प्रदेश शामिल हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर इसमें कानिओला केरिन्थिया और इस्टीरिया के प्रान्त हैं। फ़्यूम, ज़ारा और लागोस्टा द्वीप को छोड़ कर डलमेशिया का पूरा तट यूगोस्लैविया में शामिल है। इस नये और बड़े राज्य का क्षेत्रफल ९६,००० वर्गमील है जो हमारे संयुक्त प्रान्त से कुछ ही कम है। लेकिन इसकी जनसंख्या केवल डेढ़ करोड़ है जो हमारे संयुक्त प्रान्त की $\frac{1}{3}$ से भी कम है।

भूरचना

यूगोस्लैविया का देश एक विषम चतुर्भुज के समान है। यह चार प्राकृतिक भागों में बटा हुआ है।

(१) डलमेशियन तटीय प्रदेश—यहां असंख्य द्वीप और प्रायद्वीप हैं। इनके बीच बीच में तंग जलसंयोजक और चक्करदार खाड़ियां हैं। इस ओर का प्रदेश डूब गया जिससे घाटियों में पानी भर गया और अर्धडूबे पहाड़, द्वीप या प्रायद्वीप के रूप में शेष बच गये। यहाँ बहुत ही सुन्दर बन्दरगाह है। लेकिन भीतर पहाड़ी प्रदेश से रेल या सड़क द्वारा जुड़े न होने के कारण उनसे कोई काम नहीं लिया जाता है। रगूसा बन्दरगाह से एक रेल भीतरी उपजाऊ प्रदेश को गई है। इससे वह इस प्रदेश का बड़ा बन्दरगाह है। फ्यूम इटली वालों के हाथ में चला गया है।

(२) डिनारिक अल्प्स का प्रदेश—डिनारिक अल्प्स एड्रियाटिक सागर के ऊपर सपाट खड़े हुये हैं। यह चूने के पत्थर के बने हुये हैं। वर्षा होने से यहाँ की चट्टानें गल जाती हैं। इससे जगह जगह पर छेद हो गये हैं और ऊपरी धरातल पर पानी नहीं ठहरने पाता है। इसी से वर्षा की अधिकता होने

पर भी डिनारिक अल्प्स का प्रदेश योरुप भर में अत्यन्त खुश्क है। इस प्रदेश में मीलों तक किसी नदी, तालाब, या कुएँ के दर्शन नहीं होते हैं। अभ्यन्तर नदियाँ तट से दूर समुद्र में अपने बुलबुले उठाती रहती हैं। इस प्रदेश में खेती बहुत ही कम होती है अधिकतर प्रदेश में बड़े पेड़ों का भी अभाव है। केवल कुछ भेड़ों और बकरियों की मुश्किल से गुज़र होती है।

(३) मध्यवर्ती और दक्षिणी पर्वत ऐसी चट्टानों से बने हैं जिनके घिसने से उपजाऊ मिट्टी बनती है। इस प्रदेश के पहाड़ जंगलों से ढके हैं। उपजाऊ घाटियों में खेत, बगीचे और चरागाह हैं। यहां के किसान स्वावलम्बी हैं। वे अपनी आवश्यकता की सभी चीज़ें उगा लेते हैं। जब उन्हें पैसे की ज़रूरत पड़ती है तब वे उसे फल या जानवर बेच कर प्राप्त कर लेते हैं। यहां से सूखे बेर (प्रून) और सुअर बाहर को भेजे जाते हैं।

(४) **डेन्यूब के मैदान**—ये यूगोस्लैविया भर में सब से अधिक उपजाऊ हैं। मकई सबसे अधिक मात्रा में उगाई जाती है यही यहां के लोगों का प्रधान भोजन है। गेहूँ चुकन्दर (शक्कर बनाने के लिये), तम्बाकू और फल भी उगाये जाते हैं।

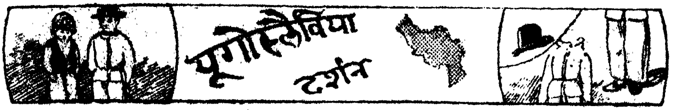
देश दर्शन

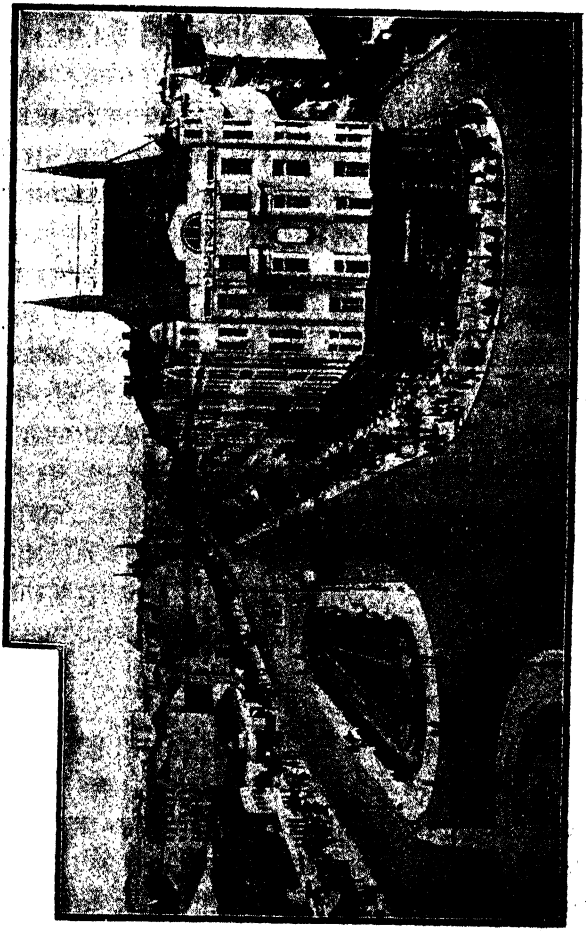
यात्रा

बलगेरिया की सीमा समाप्त होने पर पासपोर्ट और सामान की फिर जाँच हुई। इस के आगे गाड़ी यूगोस्लैविया देश के अफसरों की अध्यक्षता में आगे बढ़ी। यह नाम नया है पर देश पुराना है। यूगोस्लैविया का अर्थ दक्षिणी स्लैव है। ये सर्ब, क्रोट और स्लोवीन लोगों के देश हैं। इनमें अधिकतर एक जाति के लोग हैं पर धर्म और भाषा का अन्तर है। बड़ी लड़ाई के पहले केवल सर्बिया स्वतन्त्र राज्य था। क्रोशिया, स्लोवेनिया, बोसनिया, हर्जीगोविना, डलमेशिया, वोजवोडिना प्रान्तों पर आस्ट्रिया हङ्गारी का राज्य था। मांटीनीग्रो का पहाड़ी छोटा भाग भी एक स्वतन्त्र राज्य था। बड़ी लड़ाई के बाद ये सब राज्य अलग होकर सर्बिया में आ मिले। इन सब को आजकल यूगोस्लैविया नाम से पुकारते हैं।

सब का रंग गोरा है। सब प्रायः स्लैव जाति के हैं। फिर भी इनमें बड़ा अन्तर है। रेलगाड़ी के डब्बों में भिन्न भिन्न लोगों को एक साथ बैठे देखकर यह अन्तर एक दम समझ में आ जाता है। शहर की सड़कों और बाजारों में भी इसी तरह यह भेद साफ नजर आता है। शहर वालों की पोशाक प्रायः एक होने पर देहाती किसानों और गड़रियों की पोशाक में बड़ा अन्तर है।

बलगेरिया की ओर से देश में बढ़ने से पहले बहुत दूर तक पहाड़ी भाग मिलता है। कुछ पहाड़ियां हरी भरी और कुछ वीरान मिलती हैं। अधिकतर लोगों से ग़रीबी टपकती है। कुछ





बेलग्रेड की एक आलीशान सड़क

ऐसे भी मिलते हैं जो अधिक पढ़े लिखे नहीं हैं। पर सरकारी कर्मचारी बड़ी सभ्यता का व्यवहार करते हैं। पासपोर्ट की जाँच करने वाले अफसर ने बड़े अदब से मुझे सलाम किया। फिर वह पासपोर्ट देख कर चला गया। इसी तरह का शिष्टाचार रेलवे और चुङ्गी वाले करते हैं। चुङ्गी वाले यदि ऊपर से सामान उतार कर देखते हैं तो उसे जहां का तहां रख देते हैं। इसी तरह टिकट की जांच करने वाले अफसर पहले सलाम करते हैं फिर टिकट देखते हैं। सोफिया से चलकर कई घण्टे के बाद निश जङ्क्शन मिला। यहां से प्रधान लाइन उत्तर-पश्चिम की ओर बेल्ग्रेड को जाती है। यह लाइन बहुत दूर तक मोरावा नदी की घाटी में होकर चलती है। लेकिन डेन्यूब के संगम से काफी पहले रेलवे लाइन मोरावा की घाटी को छोड़कर बेल्ग्रेड की ओर बढ़ती है। निश शहर से दूसरी रेलवे लाइन दक्षिण की ओर जाती है। पहले कुछ दूर तक यह रेलवे लाइन मोरावा की ऊपरी घाटी में चलती है। अन्त में वह वार्डार की घाटी में प्रवेश करती है। इसी वार्डार नदी के मुहाने से कुछ दूर बसा हुआ सेलोनिका नगर इस शाखा लाइन का अंतिम स्टेशन है।

निश से आगे बढ़ने पर वीरान पहाड़ी भाग कुछ कम होने लगता है। भेड़ चराने वाले अक्सर मिलते हैं। कहीं कहीं खेत हैं। बेल्ग्रेड के समीप पहुँचने पर खेतों की संख्या बहुत अधिक हो जाती है। पहाड़ियाँ एक दम पीछे छूट जाती हैं। सब कहीं हरा भरा मैदान है। जिस गाड़ी से मैंने सोफिया से प्रस्थान किया था वह ओरियन्ट इक्सप्रेस थी। इसमें साधारण टिकट से अधिक

देना पड़ा। इस में सुविधा यह थी कि यह गाड़ी दिन में चलती थी। जिस से देश भली भांति देखा जा सकता था। वेगनलिट्ज



बेलग्रेड के प्रथम सचिव की मूर्ति

नामी प्रसिद्ध टूरिस्ट कम्पनी की ओर से इसमें स्लीपिंगकार (सोने वाली गाड़ियाँ) लगी थीं। इससे अधिक आराम देने वाले

मखमली गद्दे हिन्दुस्तान की पहले दर्जे की गाड़ी पर भी नहीं होते हैं। रात के समय पैर फैला कर सोने के लिये जगह रहती है। इन गाड़ियों का ऊपर से अलग किराया लगता है। मुझे इनकी जरूरत नहीं थी, लेकिन विवश होकर किराया मुझे भी अधिक देना पड़ा। कुछ शिलिंग फ्रांसीसी हेड वेटर को खरीज के लिये देने पड़े। रात में गाड़ी बेल्ग्रेड स्टेशन पर पहुँची। भाषा सम्बन्धी कठिनाई से बचने के लिये मैंने यहाँ के शाही होटल के प्रतिनिधि को अपना सामान सौंपा। मैं उसके मोटर में बैठ गया। कुछ ही समय में मोटर एक आलीशान इमारत के सामने आकर खड़ी हो गई।

होटल के मैनेजर को पासपोर्ट दिखलाकर मैंने अपना नाम लिखवाया। मुझे ऊपर का कमरा मिला। एक लट्टू में लगा हुआ कमरे का नम्बर मुझे दे दिया गया। ऊपर जाने के लिये लिफ्ट तैयार था। होटल के छोटे बड़े सभी कर्मचारी बड़े शिष्ट थे। जितनी बार मिले उतनी बार उन्होंने सलाम किया। कमरे में शीशे के कई ग्लास और बर्तन थे। गरम और ठंडे पानी का नल था। कई तौलियां, कुर्सी, मेज़ थीं और पलङ्ग पर विस्तर लगा था। विस्तर पर एक दम ताजे धुले हुये कपड़े बिछाये गये। बिजली की रोशनी थी। एक घण्टी का बटन भी लगा था। उसे दबाते ही झट कोई न कोई गोरा नौकर सामने हाज़िर हो जाता। एक क्लर्क कई भाषायें जानता था। अँग्रेज़ी भी बोल लेता था। इससे यहाँ बड़ा आराम था। लेकिन एक कमरे का रोज़ाना किराया १५) रु० था। नहाने के लिये सबेरे को लगभग ५ रुपया अलग देने पड़े।

चलते समय नौकरों की सेवाओं का बिल भी जोड़ा गया। इसके साथ ही उनको बख्शीश भी देनी पड़ी।



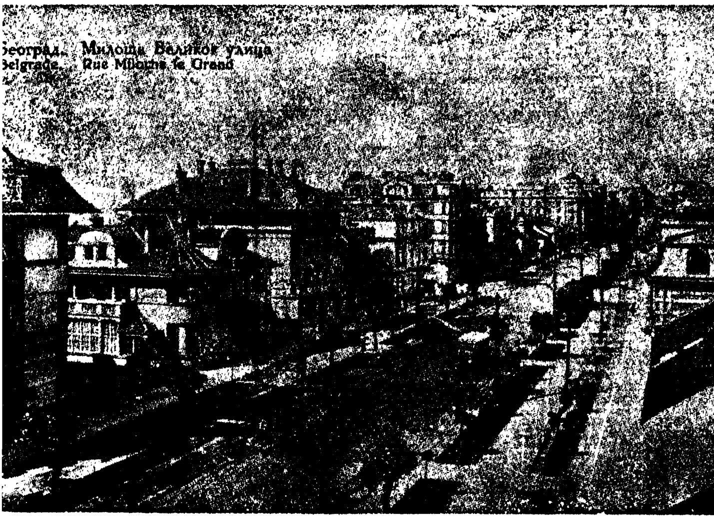
बेलग्रेड शहर का एक दृश्य

सवेरे नित्य कर्म से निपट कर पूरा दिन शहर देखने में लगाया।

बड़ी लड़ाई में यह शहर गोलाबारी से चूर चूर कर दिया गया था। प्रायः सभी मकान नये बने हुए हैं। सावा और दूना (डेन्यूब) के पास का किला जीर्णावस्था में है। लेकिन कालामेंरदान नामी पार्क बड़ा सुन्दर है। दोनों नदियों में स्टीमर चला करते हैं। शहर का अधिकतर भाग सावा नदी के किनारे बसा है। यह भाग अधिक घना है। प्रधान सड़क से जो नालियाँ पानी तक आती हैं वे जीने की तरह ऊपर उठी हुई हैं। एक सिरे पर नहाने वालों का क्लब है। धनी लोग घर से तो सजकर ट्रैम या मोटर से आते हैं, लेकिन यहाँ सब कपड़े लकड़ी की छोटी सी छोटी कोठरी में बन्द कर देते हैं। केवल जांघिया पहनकर नहाने के लिये नदी में कूदते हैं। अधिकतर नहाने वाले शाम को आते हैं। कुछ लोग धूप लेते हैं, कुछ मिट्टी में लोट लगाते हैं। वहाँ की युवतियाँ प्रायः नंगी नहाने या धूप लेने में जरा भी नहीं शरमाती हैं।

बेलग्रेड की सड़कें बड़ी सुन्दर हैं। प्रधान सड़क पर मोटर और ट्रैम गाड़ियाँ चलती हैं। भीड़ कम रहती है। इसलिये पैदल चलने वालों के लिये भी काफी जगह रहती है। उनके रास्ते और प्रधान सड़क के बीच में छोटे छोटे पेड़ लगे हैं। इन पेड़ों के इधर उधर सुन्दर फूल वाले पौधे और हरी घास लगी है। सड़क के एक ओर से दूसरी ओर जाने के लिये विशेष स्थान हैं। हर कहीं घास को कुचलकर कोई इधर से उधर नहीं जाता है। पैदल रास्ते से मिली हुई शराब, रोटी, तस्वीर, पुस्तक, कागज आदि की छोटी छोटी दुकानें हैं। डेन्यूब नदी के ठीक किनारे से लगी हुई बस्ती अधिक नहीं है। यहाँ किनारे के पास कीचड़ रहता है। सामान उतारने चढ़ाने के लिये जगह जगह पर लकड़ी के बाड़े बने हुये हैं।

बेलग्रेड शब्द का अर्थ है सफेद किले का शहर। यहां न जाने कितनी बार विरोधी दलों ने एक दूसरे को मार काट कर खून की नदियाँ बहाईं। पहले कई बार तुर्क और स्लैव लोगों में लड़ाइयां हुईं। लेकिन अन्तिम बार (१९१४-१८ में) आस्ट्रिया और जर्मनी की फौजों ने विध्वंस करने में कोई कमी नहीं की।



सावा और दूना (डेन्यूब) नदियों के संगम का एक दृश्य

फ्रांस से इस देश को काफी सहायता मिली। उनके मरे हुये सिपाहियों की स्मृति में यहाँ एक स्मारक बना है। इसी तरह देश के शहीदों की स्मृति में भी एक सुन्दर स्मारक बना हुआ है। आज कल सरकारी इमारतें योरप के दूसरे राज्यों से शान में कुछ कम

नदी हैं। शाही महल की इमारत की अपेक्षा वहाँ के हथियारबन्द पहरेदारों की पोशाक अधिक कौतूहलजनक है।

बड़ी लड़ाई के बाद इस देश के लोगों ने शिक्षा की ओर काफी ध्यान दिया। यहाँ कई स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय और अजायब घर हैं। फिर भी यह देश शिक्षा में योरप के दूसरे उन्नत देशों से बहुत पिछड़ा हुआ है।

विनोद के लिये यहाँ भी सिनेमा, थिएटर और नाच घर हैं। पर अधिकतर लोग काला मोदान पार्क में सैर करने आते हैं। यहाँ से कुछ ही दूर पुराने किले की टूटी फूटी दीवारें हैं। यहाँ से सावा और दूना के संगम का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। रात को जब नदी के जहाज़ अपनी रोशनी चमकाते हुये किनारे लगते हैं तब सुन्दरता और भी अधिक बढ़ जाती है।



यूगोस्लैविया में कई भिन्न भिन्न जातियाँ हैं उनमें एक जाति का नमूना

१७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़वेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपालो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डिगामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज़, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर (ग्रांड केनाल)।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का ४०) रु०।

DESH-DARSHAN Regd. No. A-
August 1940

अगले महीने (सितम्बर १९४०)

में

नार्वे

का

इसी तरह का

सचित्र वर्णन रहेगा

यदि आप अभी तक

देश-दर्शन

के

ग्राहक नहीं बने हैं

तो

४) रु० भेज कर

एक वर्ष के लिये ग्राहक बन जाइये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.)
and Printed by R. S. Misra, at the Bhugol Press,